राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 89 15 सितम्बर 2004

सदस्यता शुल्क : ——— भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : रुपए 40/- एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू व सूचना	51
3.	अहंकार (महर्षि शिवव्रतलाल जी)	52
4.	लघु कथा	53
5.	अनमोल वचन व ज्ञान-सार	54
6.	सत्संग सार	55
7.	सतगुरु कृपा	58
8.	सेवादारों के लिए विशेष सूचना	60

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 98

दिनांक : 10 नवम्बर, 1992

समय : दोपहर

गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा, जाग—जाग नर क्या सूता।
जाग्रत नगरी में चोर नहीं लागैं, झख मारेंगे यमदूता।।
जप कर तप कर करोड़ जतन कर, काशी जाय करौंत लीता।
बिना भजन तेरी मुक्ति कोन्या, मरज्या योगी अवधूता।।
योगी होगा जटा बढ़ा लई, अंग रमा लई भभूता।
दमड़ी कारण काया जला ली, योग नहीं तेरा हठ झूठा।।
जिनकी सुरता लगी भजन में, काल जाल से नहीं डरता।
अधर अणी पे आसन रखते, वह योगी हैं अवधूता।।
सोवतड़े नर गए चौरासी, जागतड़ा ने जुग जीता।
रामानन्द के कहत कबीरा, मंजिले—मंजिले जा पहुंचा।।

राधास्वामी ! राधास्वामी दयाल की दया !!
राधास्वामी सहाय !!! राधास्वामी !

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! ये कबीर साहब की वाणी है। दो तरह के सत्संग होते हैं। एक सत्संग तो अपनी मर्जी का होता है और दूसरा गुरु के हुक्म का। मैंने आज तक अपनी मर्जी का कोई भी सत्संग नहीं किया है। सभी मेरे महाराज जी की मर्जी के हुए हैं। आप कहोगे कि इस बात को हम समझे नहीं हैं कि आपकी मर्जी का न्यारा है और गुरु के हुक्म का न्यारा है। हां, ऐसा ही होता है। अपनी मर्जी का सत्संग तो वह होता है जो हम घर से ही प्रोग्राम बनाकर चलें कि तुमने यह शब्द गाना है और मैं

यह सत्संग दे दूंगा। वह सत्संग तुम्हें पार नहीं उतार सकता। वह तो एक वाचक सत्संग ही है। सत्संग सतगुरु की मौज का होता है। उसमें बातें याद करके नहीं चलते हैं और न ही कोई बात याद करनी पड़ती है। जैसा भी सतगुरु का हुक्म होता है वैसा ही शब्द बोला जाता है और वैसा ही सत्संग हो जाता है। मेरी बात को घमण्ड की बात मत सोचना। मैंने घमण्ड की बातें तो कभी भी नहीं कही क्योंकि सेवक कभी भी घमण्ड की बातें नहीं कहता है। मैं तो आप लोगों का सेवक हूं। मेरे गुरु की ड्यूटी बजाता हूं। उनका हुक्म था वही ड्यूटी बजाता हूं। यह आपको भी पता है कि—

छोटा सा होकर रहना रे जगत में, तज दे गर्व गुमाना।
तेरी देखत कितने ही चले गए, देख लिए तू धर—2 ध्याना।।

अगर तुम बड़ा बनना चाहते हो तो पहले बड़ा बनना सीख लो। तुम बड़े बन जाओगे। बड़े ही बने रहोगे तो कभी भी बड़े नहीं बन सकोगे। साधु महात्मा क्या सिखाते हैं? वे तो प्यार, प्रेम और मालिक की भक्ति सिखाते हैं। सो ही मैंने आपको बताया है कि मैं तो सतगुरु के हुक्म से ही सत्संग करता हूं। न मैं कोई महात्मा हूं, न कोई संत हूं और न कोई पीर हूं। दाता ! पता नहीं था कि ऐसा खेल खिलाओगे। आप लोग तो खुश होंगे कि महाराज जी बहुत ऊंची स्टेज पर बैठते हैं। सच कहता हूं कि मैं एक ही चीज से सुखी हूं अन्यथा मैं बहुत ही दुखी हूं। बस वह यही बात है कि मैं अपने सतगुरु की ड्यूटी बजाता हूं। अपने गुरु के हुक्म को पूरा करता हूं। उन्होंने जो कहा था, वह काम मैं पूरा कर रहा हूं। बस, यही खुशी है। याद करके जो सत्संग किया जाता है वह सत्संग नहीं होता है। वह सत्संग तो असफल होता है। सत्संग तो सतगुरु की मौज पर ही छोड़ देना चाहिए। जैसा भी वह कराता है उसकी मर्जी होती है। अब कबीर साहब कहते हैं—

गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा, जाग—जाग नर क्या सूता।

यही बातें मैं रोज ही सत्संग में कहता हूं। अगर इस बात को समझ लोगे कि गुरु का भजन क्या होता है तो फिर कभी भी दुखी नहीं होगे। हमें किसी भी चीज की परेशानी नहीं होगी। हम उस गुरु के भजन को नहीं समझते हैं। क्यों नहीं समझते हैं? क्योंकि हमें सतगुरु नहीं मिला है। अगर सतगुरु मिल जाता तो वे उस बात को समझा देते। हमें तो सतगुरु मिला ही नहीं केवल गुरु ही मिला। गुरु उस बात को समझाते ही नहीं है क्योंकि गुरु तो जर्रे—गर्रे में ही रहते हैं। सतगुरु दीनता में रहता है। सो जिसको सतगुरु मिल जाता है वह इन बातों को समझ जाता है और अपना काम कर लेता है। आप फिर प्रश्न कर सकते हो—क्या गुरु और सतगुरु में भी भेद है? हां, बड़ा भारी भेद है। रात और दिन का भेद है। हम गुरुओं के पल्ले बंध जाते हैं। अगर सतगुरु से हमारा मिलाप हो जाए तो फिर हमारा जन्म—मरण का चक्कर ही खत्म हो जाता है। पर हम अपने सतगुरु की बात को ही याद नहीं रखते। सतगुरु तो सतगुरु ही होता है। यही कबीर साहब कहते हैं—

गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा।

क्या तुम गुरु का भजन नहीं करते हो? सारे ही भजन करते हो, फिर भी निस्तारा तो नहीं होता। गुरु के हुक्म से कोई देवी की पूजा करता है, कोई भैरों, राम और क ष्ण की पूजा करता है। हनुमान की पूजा करते हैं। सभी अपनी—अपनी पूजाओं में लगे हुए हैं। पर कोई भी ये नहीं कहता है कि निस्तारा हो गया है। गुरु के भजन के बिना निस्तारा नहीं है। जो अपने गुरु के भजन को ही नहीं समझता है, वह पागल बना फिरता हैं। कोई अपने गुरु को किसी तरह समझता है कोई किसी तरह। कई लोग कहते हैं कि मेरा गुरु तो मुझे मिलता है। वह मुझे दर्शन देता है। इसका मतलब तो यही है कि तुम्हारे गुरु की मुक्ति नहीं हुई है। सोचो! मेरी बात को एक भी समझ जाएगा तो भी अच्छा है। इसका मतलब है कि

तुम्हारे गुरु की मुक्ति नहीं हुई है। वह भूत ही बना फिरता है। अब क्या करोगे? यह बड़ी ही शर्म की बात है। सतगुरु कभी मरता ही नहीं है। न ही सतगुरु चार दाग में आता है। उस सतगुरु के भजन के बिना निस्तारा नहीं है। अगर तुम उसकी बात को समझ लो तो कोई भी चीज बाकी नहीं रहती है। हम तो उन गुरुओं की बातों में फंस जाते हैं। वे तुम्हें धोखा दे देते हैं। मैं आप लोगों को धोखा नहीं देता हूं। मैं तो अपनी असलियत बताता हूं।

एक बहन मेरे पास आई और उसने मुझसे कहा कि इन गुरुओं ने बड़ा गुरुडम मचाया है। ये आर्य समाजी तो गुरुओं की बुराइयां करते हैं। वे बिल्कुल ठीक ही करते हैं। वे गुरुडम की बुराई करते हैं। किसी के धन को लेकर पागल बना देते हैं। किसी को अपना चेला बनाने के लिए कुछ खिला देते हैं।

एक बार की बात है। महाराज फकीरचन्द जी हरिद्धार गये हुए थे। उस जगह पर एक महात्मा ने कहा—मेरा चेला 12 बजे सतखण्ड में चला जायेगा। महाराज जी ने पूछा—वह किस दिन 12 बजे सतखण्ड में जाएगा। उसने कहा—आज से चौथे दिन वह सतखण्ड में जाएगा। महाराज जी ने एक लेख लिखा है। ये उनकी वाणी— **सत सनातन** एक पुस्तक में है। मेरी इन बातों से चौंध ही खुल गई। मैं आप लोगों को भी वे बातें बताता हूं। अब चौथे दिन 12 बजे वह चेला मर गया। दुनिया उसके पीछे पड़ गई कि महाराज मुझे भी चेला बना लो और सतलोक में भेज दो। अगर यहां पुलिस न हो, तो देश का ही सत्यानाश हो जाए। इसी तरह अगर जम के दूत नहीं हों और काल महाराज नहीं हो तो ये लोग संसार में भारी उपद्रव मचा दें। जो काल से डरते हैं वे बच जाते हैं। ये काल तुम्हारा मन ही है। तुम खुद भी काल हो। आप पूछो—हम खुद किस तरह से काल हैं? हम शराब पीते हैं और मांस खाते हैं। अंडे खाते हैं और खोटे कर्म करते हैं तो राक्षस बनकर

ही तो ये काम करते हैं। सो ही तो तुम काल के भाई हो और काल ही बन जाते हो। वही आदमी अगर अपने सभी खोटे कर्म छोड़ जाए और आर्य धर्म को अपना लेता है उसको राम के, गुरु के, क ष्ण के जिस पर उसका विश्वास होगा उसी के दर्शन होंगे। वह देवता बन जाता है। कहा है—

मन ही देवी देवता और मन ही पित्तर भूत।
मन ही हर होत है, हर को भजो सुचित।।

मैं आप लोगों को जो बातें कह रहा था उनको तो पीछे ही छोड़ गया हूं। उस महात्मा का वह चेला मर गया। परन्तु पुलिस ने उसका दाह संस्कार नहीं होने दिया। पूछ—ताछ कर ली। पुछताछ से पता चला कि उस लड़के को मियादी जहर दिया गया है। अब उस गुरु को पकड़ लिया। उस गुरु की पिटाई की गई। उससे पूछा गया कि तुमने क्या किया? उसने बता दिया कि मैंने उसको जहर दिया था। ताकि मेरी बड़ाई हो जाए। ऐ झूठे गुरुओं! इसीलिए तो तुम्हारा सत्यानाश हुआ। मैं उन झूठे गुरुओं की तेरहवीं करवाने के लिए ही आया हूं जो अपने चेलों को धोखा देते हैं।

मैंने आज तक किसी को धोखा नहीं दिया। इसीलिए मैं उन गुरुओं को कहता हूं कि तुम चेतो। अपने स्वार्थ के लिये झूठे गुरु बनकर पराई स्त्रियों का मुंह चूमते हैं। फिर भी क्या तुम उनको सतगुरु कहते हो? जो सतगुरु बनकर विषय विकार करते हैं, क्या तुम उनको सतगुरु कहते हो? सोचो ! मैं क्या कहता हूं? मेरी बातों को नोट करना और मेरे पास आ जाना ऐसा कोई गुरु, सतगुरु हो तो। इन गुरुओं ने सारे देश का भट्ठा बिठा दिया। सारा देश बर्बाद कर दिया। इसीलिए विरोधी लोग बुराई करते हैं। पर ये सभी को बराबर समझ लेते हैं। यह नहीं समझते कि कोई न कोई महात्मा भी हो सकता है। सो मैंने आपको बताया है कि ऐ सत्संगियो !

जिसने अपने लोभ और बड़ाई के लिए अपने चेले को खत्म कर दिया उसकी क्या दशा होगी? लोग अपनी बड़ाई के लिए इस तरह पता नहीं क्या—क्या कर देते हैं। बड़े—बड़े अन्याय कर देते हैं। मेरी माता, बहनों सब को मैं एक ही बात कहता हूं कि तुम अकेली किसी भी महात्मा के पास रात या दिन में न रहना। अगर कोई मेरी बहन नहीं है और दुश्मन ही है तो फिर चाहे मोडों के साथ भागती फिरो। अगर तुम सच्ची हो और आर्य धर्म की पालन करने वाली हो और तुम गुरु की सैन को समझती हो तो अपने पति के सिवाय कभी भी किसी के भी पांव को हाथ मत लगाना। लगाओ सास—ससुर, मां—बाप की सेवा करो। मैं पहले आपको अपने धर्म की बातें बताता हूं। सनातन धर्म की बातें बताता हूं। सन्तमत की बातें बताता हूं। आर्य धर्म की बातें बताता हूं। इन लोगों ने न्यारे—न्यारे टुकड़े बना लिए और इस पेट की खातिर बड़े जुल्म किये हैं। इसीलिये कहते हैं—

पेट लगाया, बड़ा पाप कमाया।

मालिक ने सभी काम अच्छे किए। हाथ दिए अच्छा किया। पैर, कान, नैन, जुबान दी ये सब अच्छे काम किए। सभी कुछ देकर अच्छा किया। पर **पेट लगाया, बड़ा पाप कमाया।** इस पेट की खातिर बड़े—बड़े जुल्म कर दिए जाते हैं। पर एक बात फिर बताता हूं। सत्संग की बातें तो मैंने पीछे ही छोड़ दी। मैं आप लोगों को सुधार की बातें कहता हूं। तुम सुधार नहीं करोगे तो सत्संग में क्या करोगे? सत्संगी तो कोई बिरला ही होता है। एक सत्संगी मेरे पास आया। वह अपनी घरवाली को धमका रहा था। मैंने पूछा—क्या बात हुई? उसने कहा—ये अपने पीहर से चार पांच तील (शूट) ले आई। मैं कहता हूं कि तू ये क्यों ले आई? इनको फेंक दे। जब हम अपने घर में कमा कर खाते हैं और घर में सब कुछ है तो फिर यह वहां से क्यों ये कपड़े लाई है? मैंने कहा—कोई बात नहीं अगर ले

आई है तो। उसने कहा—नहीं। हम तो अपने गुरु की बात को मानते हैं। उन्होंने महाराज चरण सिंह से नाम लिया हुआ था। एक तो वो सत्संगी और दूसरी एक सत्संगिन ने अपने पुत्र की पत्नी को जला दिया। वह भी चरण सिंह की ही सत्संगिन है। एक मेरा सत्संगी है। उसने गाय मार दी और लोगों के नाम लगा दी। क्या ये सत्संगी माने जा सकते हैं? शर्म की बात है तुम दायजे की खातिर बहु को फूंक देते हो। दायजे की खातिर तुम रिश्ता छोड़ देते हो। दूसरा रिश्ता ले लेते हो। यह बड़ा जुल्म है। ये महात्मा ही तो समाज को सुधारते हैं। दूसरा इसे नहीं सुधार सकता। मैं तो सुधार की ही बातें कहता हूं। तुम दायजे के लिए मरते हो। ये दान तुम्हारा सत्यानाश कर देगा। दान से कोई भी तिरता नहीं। अगर कोई तिरा हो तो किसी का नाम बताओ। क्या कोई दान लेकर तिरा है? कोई भी नहीं तिरा है। पर ऐसा तो बहुत होता है कि दान लेकर गिर जाते हैं। सो इस बुरी आदत को छोड़ो। ये सतगुरु भी दान ले लेते हैं। ये गुरु भी धोखा करते हैं। सो इन गुरुओं के आखरी वक्त में जब कब्र में पांव चले जाते हैं उस वक्त वे यही कहते हैं कि काल महाराज कर्जा मांगता है एक बकरे की बलि का। क्या तुम उनको भी सतगुरु कहते हो? सतगुरु तो काल का कर्ज चुकता करने आते हैं। संतों को तो सतपुरुष भेजता है। इसीलिए संत तो संत ही होते हैं। अगर तुम उनकी बातों को वेदों और शास्त्रों से मिलाओगे तो धोखा खा जाओगे। संत तो वेदों के कर्ता के कर्ता होते हैं। वे विद्या के गुलाम नहीं होते। वे तो करनी के गुलाम होते हैं।

मैं आपको कितनी बातें बताऊं? कई तो मरते वक्त कहते हैं कि काल महाराज बाहर खड़ा है और दो बकरों की भेंट मांगता है। मेरा चोला तो तभी छुटेगा। मैं उनके चेलों के नाम बताऊं तो आप भी क्या कहोगे? फिर भी क्या आप उनको सतगुरु कहोगे?

क्या आपको शर्म नहीं आती? मैं तो सीधी बातें कहने वाला आदमी हूं। सो मैं इन सतगुरुओं की सीधी बातें बताने और इनको चेताने के लिए आया हूं। जो अपने आप को सतगुरु कहते हैं और 5—5, 10—10 बच्चे भी पैदा कर लेते हैं, क्या आप उनको सतगुरु मानते हो? बड़े शर्म की बात है। अगर सतगुरु ही बनते तो सुनो! नानक साहब ने अपनी धर्म पत्नी को माता कहना शुरू किया जब वे सतगुरु बने। फिर हजूर महाराज ने अपनी धर्मपत्नी को क्यों माता कहा और स्वामी जी महाराज ने उसे बेटी कहा? राम क ष्ण परम हंस भी अपनी धर्म पत्नी को माता कहा करते थे। मैं किसी का खण्डन नहीं करता हूं। मैं आप लोगों को सचाई बताता हूं। मेरे एक प्रेमी ने कहा—संत सतगुरुओं का तो बड़ा सुन्दर लिबास होता है। मैंने कहा—वह कैसा होता है? अरे ! वेदांत तो तुमने सुना होगा? तुम्हारी भागवत में आता है कि राजा परीक्षित के मस्तक पर कलयुग आकर बैठा और पूछा कि मैं कहां जाऊं? तो उसको यही कहा गया कि तुम वहीं जाओ, जहां सुन्न हो, शराब में जाओ, चोरी—जारी, रंडी पेशे में जाओ। कलियुग ने कहा—ये तो सब एक जैसे हैं और बताओ? कहां जाऊं तो उसे यही कहा गया कि सुन्न में जाओ। अब सुन्न में सोना भी आता है। मैं इस बात को अच्छा समझता हूं। **संत सतगुरु होकर सोने के आभूषण प्रयोग करता है वह काल से कभी बच नहीं सकता है।** उस पर कलयुग आकर बैठ गया। हम संत होकर सोने के जेवर पहनते हैं, पहरे लगवाते हैं और कहते हैं कि मैं संत सतगुरु हूं। मैं राधास्वामी धाम से जीवों को लेने के लिए आया हूं। वह जीवों को लेने नहीं डुबोने आया है। अगर कोई बोलना चाहता है तो मेरी बातें नोट करके मेरे सामने आ जाना पर अपनी छाती पर हाथ रखकर बातें करना। मैं संतों का लिबास पहन कर बातें करता हूं जिन्होंने अपनी जिन्दगी में कुरबानी की। जैसे दादू, पलटू, कबीर, रैदास, नानक जी जितने

भी संत आए हैं, मैं उनका बेटा हूं। इसीलिए मैं सीधी बातें कहता हूं। आज गुरुडम इतना फैला हुआ है। अब शब्द तो बड़ा अच्छा कहा है कि—

गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा।

गुरु के भजन के बिना उद्धार नहीं हो सकता। पर हम उस गुरु को समझते तो नहीं हैं। आप पूछ सकते हो कि क्या आप जान गए। हां मैं अपने सतगुरु को जान गया। मेरे सतगुरु ने जीवन भर साधन अभ्यास किया। सभी कार्य किए। घर में रहे। बड़ा भारी प्यार दिखाया और सबसे बड़ी बात यह है कि 90 वर्ष की उम्र में तीन दिन पहले बता दिया उस दिन जाना है। एक दिन भी बीमार नहीं हुये। इसलिये मैं अपने सतगुरु को परम संत सतगुरु मानता हूं। हम जो जीवों को धोखा देते हैं तो फिर मरते वक्त कीड़े पड़ कर मरना पड़ता है। मेरे पास एक बहन आई। उसने 505 रुपए मुझे दिए। मैं धर्म से कहता हूं, अगर मुझे उस बात का पता हो तो मैं कीड़े पड़ कर मरूं। इन गुरुओं ने कोरा पाखण्ड मचाया है। मैं सच कहता हूं। मुझे इन बातों का पता नहीं है। वह आई और मुझे रुपये देने लगी। मैंने पूछा—ये कैसे रुपए हैं, बहन जी। उसने कहा—महाराज ! आपने मेरा बड़ा भारी भला कर दिया। मैंने कहा—क्या कर दिया? उसने कहा—महाराज जी ! चालीस हजार मन कपास पड़ी थी उसमें आग लग गई और आपने बुझा दी। एक मशीन जल रही थी। उसके ऊपर आप खड़े दिखाई दिये। पानी का लोटा लिए हुए थे। आपने उस पानी के लोटे से छिड़काव करके सारी आग बुझा दी। मैंने सोचा—वाह ! तू तो महात्मा बन गया। तू पहुंच वाला और करणी का धनी बन गया। इसी तरह तो गिरावट आती है। मैं अपनी बातें कह कर तब दूसरे की बताया करता हूं। थोड़ी ही देर में एक बहन और आई। वह देवसर की थी। उनकी एक लड़की पीली बंगा से आई। उसने पचास रुपये

चढ़ाए। जैसी श्रद्धा हो, वो तो उतने ही चढ़ाता है। उसने भी ऐसी ही बात की। मैंने पूछा—क्या बात है? ये कैसे रुपये हैं? उसने कहा—महाराज ! हमारी तो एक झोंपड़ी थी गांव में आग लग गई थी। आपने हमारी झोंपड़ी बचा ली। उसके साथ तीन चार आदमी थे। उन आदमियों के बारे में पूछा। उसने बताया कि ये आपके दर्शन करने आए हैं। इनको आश्चर्य हुआ कि चारों तरफ की घास फूंस की झोंपड़ियां जल गई। पर मेरी झोंपड़ी नहीं जली। मैंने उन्हें बताया कि इसको मेरे गुरु ने ही बचाया। मैं सच बताता हूं। मैंने नेम पहले भी किया था और फिर भी करता हूं। मैं इस बात को सुनकर घबरा गया। मैं विचार करके पं0 फकीरचन्द जी के पास गया। मेरे गुरु महाराज तो चले गए थे। महाराज फकीरचन्द जी ने कहा—वह आ गया मेरा सतगुरु अब सत्संग करेगा। मेरे साथ यह मास्टर भी था। यह भी घबरा गया कि यह कैसा संत है। इनको सतगुरु कहता है। पर उनका बड़ा प्यार था। मैं बैठा तो उन्होंने कहा—संत ताराचन्द ! मैं आपसे एक बात पूछ लूं। मैंने कहा—पूछो जी। उन्होंने कहा—मैंने तो यह बात सभी गुरुओं से पूछी है। सभी में धोखा है। अब मैं यहां भी एक बात पूछता हूं। वह है कि एक बार बाबा चरण सिंह जी महाराज यहां आए थे। उन्होंने मुझे बुलाया। मैं गया, मैंने कहा—तू बाबा सावण सिंह जी का चेला है और मैं महर्षि शिवव्रतलाल जी का बेटा हूं। पर एक बात सच्ची बता दे—होशियारपुर में एक लड़की ने चोला छोड़ा है। उस लड़की ने मरते वक्त कहा कि महाराज चरण सिंह कार लेकर आ गए हैं। बाबा फकीरचन्द जी हवाई जहाज लेकर आ गए हैं। मैं तो वहां गया नहीं। मैं तो धर्म से कहता हूं। आप बताओ। क्या आप गये थे? महाराज चरण सिंह जी ने कहा—मैं नहीं गया। मैंने कहा—फिर आप इन सबकी आंखों में धूल क्यों देते हो। सब को कहो कि मैं तो कहीं भी नहीं जाता हूं। उनका एक पाठी था। उसने कहा—इन

बातों के कहने का टाइम नहीं है अब। महाराज फकीर चन्द जी ने कहा—क्यों? क्या हो गया? उसने कहा—सच्ची कहने का आर्डर नहीं है। सच्ची तो मंसूर ने कही थी। उसकी कितनी दुर्दशा हुई? महाराज फकीरचन्द जी ने कहा कि उसने सच्ची नहीं कही थी। वह तो खुदा बना था। उसने आवाज दी थी, अनलहक, अनलहक। जैसे हम सोहम् की आवाज कहते हैं। वह तो खुदा बना था। ऐसे खुदा नहीं बनता है। मैं सच्ची कहता हूं कोई मुझे मारे। अगर एक फकीरचन्द मरेगा तो हजारों फकीर चन्द खड़े हो जायेंगे। उन्होंने मेरे से कहा कि संत ताराचन्द ! आप कुछ जवाब दे सकते हो क्या? मैं तो चुप रहा। पर उन्होंने कहा कि मेरे पास अमेरीका से एक लड़की आई हुई है। मैंने उसे अमेरीका में दर्शन दिए थे। उसका लड़का बीमार था। उस लड़की ने कहा था—अगर कोई संत हो तो मेरे लड़के को ठीक कर दे। मैं उसकी बदंगी करूं। मैं उसको स्वप्न में दिखाई दिया और उसको दवाई बता दी। वह लड़का ठीक हो गया। अब यहीं आई हुई है। संत ताराचन्द ! मैं तो अमेरीका में गया नहीं। मैं गौड़ ब्राह्मण हूं। मैं झूठ नहीं बोलता। मैंने ब्राह्मणी का दूध पीया है। अगर मैं झूठ बोलता हूं तो मैं कीड़े पड़कर मरूंगा। क्या आप जाते हो? मैंने कहा—जो मैं बात लेकर आया था, वह बात तो मेरी हल हो गई और मेरे को तो आपने डुबो (बचा) दिया है। उन्होंने पूछा—डूबो कैसे दिया है? मैंने कहा—मैं तो महंत बनकर आया था। मैंने भी दो तीन घरों की आग बुझाई थी। अब आपने मेरा सब पाटिया साफ कर दिया है। मेरा तो आपने महन्तपना ही खो दिया। उन्होंने कहा—बेटा ! बस यही बात है। इन रुपयों को खा न लेना। अगर ये रुपए तूने खा लिए तो पेट कटा कर मरेगा। जो गुरु सत्संगियों के चढ़ावे को खाते हैं वे सड़—सड़ कर मरते हैं। मैंने कहा—इस बात का तो मेरे गुरु ने पहले ही नेम करवा दिया था कि संगत का चढ़ावा मत खाना। सो

इसी कारण से संगत के मैं चार पैसे नहीं बरतता हूं। **वे गुरु जो जायदादें बना जाते हैं और बेटे पोतों के कारखाने खुलवा जाते हैं वे मारे जाते हैं।** इसीलिए मैं किसकी जायदाद बनाऊं? मेरी तो सारी संगत ही मेरा परिवार है।

इसीलिए गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा। गुरु के भजन को समझता कौन है? हम लोग गुरु का भजन तो गुरु के नाम को ही समझते हैं। नाम मिल गया कि हां मिल गया। कहते हैं कि नाम ले लिया और नाम कौन सा बता दिया? किसी ने बता दिया कि राधास्वामी है। किसी ने सतनाम और सतपुरुष, किसी ने बताया औंकार, किसी ने रारं और सोहम् बताया है। ये अपने—अपने नाम बता दिए। किसी ने अभड़ पुरुष बता दिया। किसी ने निर्भय और अनघड़िया बता दिया। किसी ने आनन्द और किसी ने परमानन्द बताया। किसी ने सुधानन्द और मंगलानन्द बता दिया। किसी ने कुछ और किसी ने कुछ। सभी ने अपने—अपने धुनात्मक नाम बता दिए। धुनात्मक नाम ही छठे चक्कर से ऊपर होता है। ये सब काल के नाम हैं। नीचे के सब बनावटी नाम हैं। छठे चक्कर से ऊपर जब चलोगे तो धुनात्मक नाम मिलेगा और वह धुन सभी को सुनाई देगी। उसे धुनात्मक नाम कहते हैं। इसे कहते हैं कि—

गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा।
जाग—जाग नर क्या सूता।।

ऐ सत्संगियो ! तुम सब ही सोये पड़े हो और मैं भी सोया पड़ा हूं। पर सतगुरु की दया मेहर होती है फिर स्टेज पर आकर मैं जाग जाता हूं। कोई किसी तरह से सोता है और कोई किसी तरह से सोता है। इस सोने में भी भेद बताया है। कहते हैं—

जागन से सोना भला, जो कोई जाने सो।
अंतर डोर लागी रहे, बाल न बांका हो।।

सोने सोने में भी भेद है। सो सोना भी बुरी बात नहीं है। पर

हम संसारी लोग तो सोये पड़े हैं। किस तरह? कोई तो माया के नशे में पड़ा है। कोई पोते—पोतियों और लड़कों के नशे में सोया पड़ा है। कोई शराब कबाबों के नशे में सोया पड़ा है। कोई विषय—विकारों में सोया पड़ा है और कोई राजनीति के घमण्ड में सोया पड़ा है। कभी यह भी ख्याल किया कि हमारी मदद किसने करनी है। इन चीजों में से तो हमारी मदद किसी ने भी नहीं करनी है। एक महात्मा की बात मुझे याद आती है वह कहता है—

जब लोग आपस में मिलते हैं तो कोई कहता है कि सुनाओ! तेरे धन माल कितना है? तेरे बच्चे और परिवार कितना है? कोई भी यह नहीं कहता है कि तेरा प्रभु से प्यार कितना है? सारे ही धन जायदाद की, राजी खुशी की पूछते हैं। बच्चों की भी पूछते हैं। इस बात को कोई भी नहीं पूछता है। केवल एक संत सतगुरु ही यह बात पूछता है। वह कहता है कि भाई ! तुमने अपना कितना रास्ता तय कर लिया है। इस गुरु के भजन को सुनकर निस्तारा हो जाता है। अन्यथा निस्तारा नहीं होगा, कभी भी। यही तो एक गुरु की दया है।

आप भजन तो सारी रात करते (गाते) हो। यह भजन नहीं है। ये तो चेतावनियां हैं। भजन तो कहते हैं—

बिना बजाए, निशदिन बाजै मुरली बीन सितार।

वे तो रात और दिन बजते ही रहते हैं। उस धुनि में जब हम चले जाते हैं उस का नाम गुरु का भजन है और उस सतगुरु की दया मेहर से हम वहां पहुंच जाते हैं। फिर शांति मिल जाती है। वह भजन बनता ही रहता है।

माला फेरूं न हर भजूं, मुख से कहूं न राम।
मेरा साईं मोको भजै, तब पांऊ विश्राम।।

मेरा मालिक खुद ही मुझे भजना शुरू कर देता है। पर मैं आप लोगों से बातें करता—करता संसारी सुधार की बातें कहकर

फिर दूसरी तरफ आ गया। पर मैंने गलत बातें आप को नहीं बताई हैं। आप अपने साथ क्या लेकर जाओगे? सिकन्दर 40 कौस का खजाना छोड़ गया। रावण सोने की लंका को यहीं छोड़ गया। फिर क्या कहता है—

क्या मांगू कुछ थिर न रहाई।
देखत नैन चले जग जाई।।
एक लख पूत, सवा लख नाती।
ता रावण घर दीया न बाती।।
सोने का महल, रुपये का छाजा।
छोड़ चला नगरी का राजा।।
कोई चिनाए महल, कोई चिनाए टाटी।
उड़ जाएगा हंस और पड़ी रहेगी माटी।।

अब यही बताया गया है कि—

क्या मांगू—कुछ थिर न रहाई।
देखत नैना चले जग जाई।
कहे कबीर यह अंत की बारी।
ज्यों पल्ला झाड़ चला जुआरी।।

क्या किसी जुआरी को जीत कर घर में आते देखा है? सभी पल्ला झाड़ कर आ जाते हैं। हम भी तो जुए का ही खेल खेल रहे हैं। यही तो जुआ है कि हम आए हैं और हमें उस मालिक ने भेजा है। सतगुरु की दया है। हम यहां आकर मीठी जेल में फंस गए हैं। उस परमात्मा की भक्ति को भूल गए हैं। सारी लख चौरासी जिया जून में वही बड़ा है जो परमात्मा की भक्ति करता है और वही भागी है। तुलसी दास जी ने बड़ी सुन्दर मिसाल दी है—

नौ लाख जल के जीव हैं, दस लाख पंखेरू जान।
एकादस कीट भ ंग हैं, स्थावर बीस बखान।।

तीस लाख पशु योनि हैं, चार लख नर होई।
तुलसी इनमें जो राम भजै, धन्य है सोई।।

तुलसी दास जी कहते हैं जो इनमें राम भजता है वही भागी है। कबीर साहब भी इस दोहे में बड़ा जोर देते हैं कि—

राम भजन्ती कन्या भली, साकेट भला न पूत।
छेरी के गल गलथना, जा में दूध न मूत।।

उस परमात्मा का, सतगुरु का भजन करने वाली तो कन्या भी अच्छी है। वे दुष्ट बेटे किस काम के जो कि परमात्मा के नाम में विक्षेप डालते हैं। दुर्योधन आदि सौ थे। उन्होंने अठारह अक्षोहिणी सेना को मरवा (खपवा) दिया। मीरा बाई तो एक ही थी अपने बाप रतन सिंह के घर में। छोटी बेटी थी। पीहर और ससुराल दोनों जगह का उसने उद्धार कर दिया। सो राम को भजने वाली कन्या अच्छी होती है। दूसरे दोहे में कबीर साहब जी कहते हैं—

राम भजन्ता कुष्ठी भला, चुई—चुई पड़ै जो चाम।
कंचन देह किस काम की, जा मुख नाहिं राम।।

राम भजने वाला तो कोढ़ी भी अच्छा है भले ही उसकी त्वचा से कोढ़ चू रहा है और खोटे कर्म करने वाला सुन्दर शरीर वाला किसी भी काम का नहीं है। उसे तो मालिक जल्दी उठा ले तो अच्छा है। उसके ऊपर तो कबीर साहब कहते हैं—

जीवन तो थोड़ा भला, जो हरि सुमरन होय।
लाख वर्ष का जीवना, लेखे धरै न कोय।।

उसको कोई लेखे नहीं रखता है। गिद्धों और सिद्धों में कोई भी अन्तर नहीं होता है। गिद्ध भी आसमान में उड़ते हैं तो सिद्ध भी आसमान में उड़ते हैं। सिद्ध भी शराब और मांस खाते हैं तो गिद्ध भी मांस खाती हैं। वे सभी राक्षस होते हैं।

सो प्रेमियो, सत्संगियो ! इन्सान बन कर उस गुरु के भजन को याद करो। उसके भजन के बिना न तो निस्तारा किसी का

हुआ है और न हो सकता है। अब भजन तो सारे ही करते हैं। मैं एक मिसाल देकर बताऊंगा कि भजन कौन सा होता है। हम तो उसी को भजन समझ लेते हैं जो राम—राम, राम—राम करते हैं। ऐसे तो सारे ही करते हैं पर राम के नाम में कितना अंतर है? पहले भी मैंने दो दोहों पर बातें की थी और आज भी मुझे दोहे ही याद आ गए। वे बताए हैं और यही फिर बताता हूं कि राम भी तो चार किस्म के हैं। तुम कौन से राम का भजन करते हो? दूसरी बात यह है कि तुम पहले अपने शास्त्रों को लेकर चलते हो तो बताता हूं कि जो नाभि से हिलौर उठा करके जाप किया जाता है वह जाप कितना है? मैं तो सीधा कहता हूं कि कई योगी लोग नीचे की तरफ ही आते हैं। जुबान से अगर हम दो हजार जाप करते हैं तो कंठ से जाप तो 500 ही बहुत हैं और अगर हम कंठ के पांच सौ जाप करते हैं तो हृदय के जाप दो सौ ही बहुत हैं। हृदय से कोई दो सौ करता है तो नाभि से सौ जाप भी बहुत हैं। हम इनको ऊपर उठाकर चलते हैं और हम ऊपर की मंजिलों पर जाते हैं। बेखरी वाणी से तो ये चौबाणी नीचे ही रह जाती है। मैं साधन अभ्यास करने वालों को बताता हूं। ये चौबाणी, परा, पसन्ती, मध्यमा, बेखरी नीचे ही रह जाती हैं। कबीर साहब कहते हैं—

चौबाणी, हम न मानी।

नीचे की चौबाणी को वे क्यों नहीं मानते हैं? क्योंकि इनमें मुक्ति नहीं है। इनके साधन करने वाले तो केवल स्वर्गों, वैकुण्ठों में ही जा सकते हैं। वे ऋद्धियों—सिद्धियों में फंस जाते हैं। मुक्ति इन स्थानों पर नहीं है। कबीर साहब की वाणी तो सीधा कहती है—

रुक गये कण्ठ, दसों दरवाजे मच गई घ्यारी रे।
मनुवा नाहीं विचारे रे, लोभीड़ा नाहीं विचारी रे।।

कबीर साहब ने तो कहने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जब कण्ठ रुक जाते हैं, साथ ही दसों दरवाजे रुक जाते हैं। मैं

समझदार आदमियों के लिये बताता हूं नीचे से प्राण सिकुड़ने शुरू होते हैं। योगी लोग नीचे से ही अपना अभ्यास करना शुरू किया करते थे। जब मरने लगते हैं तब प्राण नीचे से सिकुड़ते हैं, ऊपर को सिकुड़ते जाते हैं तो सोचिये, जब गुदा चक्कर के प्राण निकलकर इन्द्रिय चक्कर पर आ जाते हैं, उसका काम बंद हो जाता है। तब उनका गणेश कहां जाता है? फिर ऊपर नाभि से प्राण सिकुड़ कर जाते हैं तो फिर परा वाणी का (विष्णु का) जाप कहां चला जाता है? वह तो खत्म हो गया। जब नाभि से प्राण निकल कर हृदय में आ अटकते हैं तो फिर नीचे के सभी जाप बंद होकर कंठ में आकर सांस बोलता है। इसे घरडू कहते हैं। हृदय का भी प्राण निकल जाता है। हृदय का जाप कहां चला गया? कंठ के बाद में जीभ में आते हैं सारी नीचे की वाणियों के जाप खत्म हो जाते हैं। मैं अपनी तजुर्बे की बातें बताता हूं। बनावटी बातें नहीं बताऊंगा। आप प्रश्न कर सकते हो कि ऊपर के जाप भी बंद हो सकते हैं। हां ऊपर के जाप भी बंद हो सकते हैं। यह कोई बड़ी बात नहीं है। नीचे यह कब्रिस्तान है। नीचे के जाप बंद होते हैं। इनमें मुक्ति नहीं है। मुक्ति तो दसों द्वारों से आगे है। नौ दरवाजे खाली करके जब दसवीं गली में पहुंचोगे तब तुम्हें गुरु के भजन का पता चलेगा। इसके नीचे गुरु का भजन नहीं है। इनसे ऊपर ही सतगुरु का भजन है। इसीलिए दसवें द्वार के नीचे तो और ही बातें हैं। नीचे तो कब्रिस्तान और मुर्दे हैं। उनकी ऊपर वालों की नीचे झलक मात्र है। आप कहोगे कि हमें ये सब समझाओ जी। ऐसे तो हमारे सनातनी लोग भी कहते हैं कि सूर्य की झलक पानी के घड़े पर पडती है और पानी के घड़े की झलक दीवार पर पड़ती है। सूर्य न ही घड़े में है और न ही दीवार पर है। सूर्य तो ऊपर है। सो नीचे जो झलक पड़ती है वह त्रिकुटी की ही झलक है। त्रिकुटी के तीनों अक्षर अ—उ—म की ही यह झलक है। अ से

ब्रह्मा, नीचे इन्द्रिय चक्कर में बन जाता है। उ में विष्णु की झलक नाभि में पड़ जाती है। म में शिव जी की झलक हृदय में पड़ती है। इन लोगों को यह पता नहीं है, वे ध्यान लगाते हैं तो किसका लगाना चाहिए? जिसका ध्यान लगाया जाता है वहीं तो जाना पड़ता है। सो अगर आपको मंजिलों का पता होता तो आप कभी भी धोखा नहीं खाते। तुम मंजिलें—मंजिले पहुंच जाते।

अब यह तो ऊपर का प्रतिबिम्ब है जो नीचे पड़ता है। तुम तो प्रतिबिम्ब की भी पूजा नहीं कर सकते हो। हम तो प्रतिबिम्ब के प्रतिबिम्ब की पूजा करते हैं। कई भाई कह देते हैं कि ये तो खंडन करते हैं। नहीं यह खंडन नहीं है। तुम्हारे वेदों में तो नीचे की पूजा के बारे में बहुत बुरा लिखा है। मैं न तो वेदान्ती हूं और न वेदान्त को जानता हूं। मैं वेदान्त के उसूलों को जानता हूं। वेदों की लाइन को जानता हूं। उन्होंने वेदों को देखा है, पढ़ा नहीं है। लेकिन मेरे पास चारों वेद हैं। इसीलिए बताता हूं। जब तुम साधन अभ्यास से इनको छोड़कर चलोगे, इनकी झलक पड़ती है। जब तुम ऊपर जाते हो तो झलक इन तीन अक्षरों में मिल जाती है। ये तीनों अक्षर त्रिकुटी में जाकर मिलते हैं। इस स्थान की निशानी यही है कि वहां पर ओ३म् की धुनि होती है। 'ओ३म्—ओ३म्'। कई मुसलमानों के बाबा उसे 'हू—हू' कहते हैं। कई उसे 'बम—बम' बोलते हैं। कांवड़ चढ़ाने वाले भाई कावड़ लाते हैं। ये अगर उस जगह पर एक बार भी अपनी कांवड़ चढ़ा दें उस शिव जी की पिंडी पर, तब तो उनकी सौ पीढ़ियां तिर जाएंगी। ये तो यहां पत्थर की मूर्ति पर ही पानी चढ़ाते हैं। फिर इनके ढांचे बिगड़ जाते हैं। क्योंकि ये असली शिव जी को तो ठोकर मारते हैं, असली पार्वती को तो धक्के देते हैं। पत्थर की मूर्तियों पर पानी चढ़ाते हैं। गंगा जल चढ़ाते हैं। बताओ ये किस तरह से तिरेंगे? असली शिव, पार्वती कौन हैं? मैं नहीं कहता हूं कबीर साहब जी कहते हैं—

घर का शंकर मरे पियासा, बाहर करै जल धारा।
ऐसा पुत्र नर्क का बासी, महा दुष्ट हत्यारा।।

घर का शंकर मां—बाप हैं, घर के शंकर सास—ससुर हैं। इनकी सेवा करनी सीखो। वह शिव जी महाराज एक दम खुश हो जाएगा और यही कांवड़ श्रवण ने चढ़ाई थी। ये बातें मेरे आगे क्यों आई? क्योंकि मैं अन्तर की बातें कह रहा हूं। त्रिकुटी में तीन धुनियां होती है, वे तीन अक्षर हैं, उन तीनों अक्षरों से तीन देवता बन जाते हैं। उनको काफी लोग ओ३म् कह देते हैं। अ—उ—म इनसे मिलकर 'ओ३म्' बन जाता है। पर इन लोगों को पता नहीं है। फिर भी वह शब्द है—

गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा, जाग—जाग नर क्या सूता।

वह सतगुरु का भजन कहां मिलता है? एक सत्संगी ने यही तो एक प्रश्न किया था कि हम समझते नहीं है। ये कई मंजिलें होती हैं। एक मंजिल भेषी की होती है। वे भेष करके ही अपना पेट भरते हैं। एक मंजिल टेकी की होती है। वे जिस भी मत, मजहब में जाते हैं उनकी टेक पकड़ लेते हैं। कहते हैं कि यह मत बहुत अच्छा है। एक मंजिल साधु की होती है। वह किसी की टेक नहीं पकड़ता है। साधु किसे कहते हैं? साधु वही होता है जो अपना साधन अभ्यास करके वेदों की हद में पहुंच जाता है।

साधन करता है सोई साधु।
तज के आलस वाद—विवादु।।

उस साधन करने वाले को ही साधु कहते हैं। जो उससे भी अगली मंजिल पर पहुंच जाता है वह हंस हो जाता है। पर किसी समय पर वह भी गिर जाता है। कोई भाई यदि प्रश्न करना चाहता हो तो मुझ से जरूर ही प्रश्न कर लेना। पर वह प्रश्न अपने खुद के तजुर्बे से ही करना। आगे वे हंस की गति को छोड़ कर परम हंस की गति पर चले जाते हैं। परमहंस गति का आदमी कम

गिरता है उससे आगे जाकर संत गति आती है और उससे आगे की सीमा में पहुंचकर परमसंत बन जाता है। उस परम संत का दर्जा सब से ऊंचा है। इसीलिये गुरु के भजन के बिना निस्तारा नहीं है। गुरु के भजन के बिना निस्तारा कैसे हो? दुनिया में तिरने का तो एक ही मार्ग है। दूसरा तो कोई भी मार्ग नहीं है। वह मार्ग गुरु के भजन का ही है। गुरु का भजन धुनात्मक नाम है और वह भी मंजिलें मंजिले करके पहुंचा जाता है। इसीलिये मैं कह रहा था—

जाग—जाग नर क्या सूता।
जाग्रत नगरी में चोर नहीं लागैं,
झख मारेंगे यमदूता।।

यह शरीर एक सब से बड़ी नगरी है। आपने सुना है—

पिंडे सो ब्रह्मंडे, खोजै सो पावै।
तत्त्वा तो में तेरा पीव, सतगुरु होय लखावै।

जो वस्तु पिंड में हैं वही ब्रह्मण्ड में हैं। जो ब्रह्मंड में हैं वही पिंड में हैं। सो यह शरीर सब से बड़ी नगरी है, जो इस शरीर में आकर सो जाता है उसको चोर ठग लेते हैं। औरों के चोर तो बाहर से दाखिल होते हैं। इस नगरी के चोर तो साथ ही पैदा होते हैं। इस नगरी के चोर—**काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हैं जो इस शरीर के साथ ही पैदा होते हैं।** विषय—विकार सब चोर ही हैं। ये इसके अंदर ही बड़े हुए हैं। पर ये कब निकलते हैं? ये तभी निकलते हैं जब सतगुरु की दया से शील, संतोष, विवेक और विचार आ जाते हैं। तब ये पांचों चोर भाग खड़े होते हैं। पर ये शील, संतोष, विवेक विचार कब आयेंगे? ये सब गुरु के भजन से ही आते हैं। गुरु के भजन के बिना निस्तारा हो ही नहीं सकता है। गुरु का भजन तभी होगा जब तुम जाग जाओगे। उस जागने का क्या मतलब है? अपने अंतर में गुरु के सुमरन ध्यान को नाम को याद रखना ही जागना है। सो गुरु के भजन को कभी भी मत

भूलो। तभी तुम जीवित रह सकोगे। काल से बच सकते हो। उस जाग्रत अवस्था में चोर नहीं लग सकते हैं। जो साधन अभ्यास में लगा रहता है और अपना भजन करता रहता है उसमें वे चोर कभी भी दाखिल नहीं हो सकते हैं। वे चोर भाग जाते हैं। मैंने तो अपनी छोटी उम्र में महात्माओं का संग किया था। एक महात्मा बताया करते थे कि जब शील, संतोष, विवेक आता है तो काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि भग्गी दे देते हैं और जब जीव काम, क्रोध में फंस जाता है, विषय—विकारी बन जाता है तब शील—संतोष विवेक, विचार, छोटे—छोटे बच्चों का रूप बनाकर शरीर से निकल जाते हैं। यही बात तो कबीर साहब कहते हैं कि—

बसता शहर उज्जड़ कर दीन्हा, उज्जड़ फेर बसाया हो।

बसता शहर तो तभी था जब इसमें शील, संतोष, विवेक थे। जब काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आ गए तो उन्होंने पूरी तरह कब्जा कर लिया। पर सतगुरु की दया ने शील, सन्तोष, विवेक फिर जगा दिए। तब यह शहर फिर गुलजार हो गया। पांचों चोर इसमें से निकल भागे। सो इन पांचों चोरों का पकड़ना ही भारी भक्ति है। पर ये किसी से पकड़े नहीं जाते। गुरु के भजन के बिना दूसरा कोई भी उपाय नहीं है। गुरु के नाम के बिना इनको कोई पकड़ ही नहीं सकता है। भागी वही है जो गुरु के नाम पर डट गया है। इसे कहते हैं—

गुरु वचन पर डटगे, कटगे फंद चौरासी के।
गुरु वचन को त्यागै, दुख पावै पातक लागै।
जाने न शारद शेष गुरु की माया।

अब आप कहोगे कि आप तो नाम के बारे में ही बातें कह रहे थे। सो मैंने बताया था कि वह नाम मंजिल अनुसार है। सतलोक से नीचे—नीचे ब्रह्म पद के नाम हैं। इनसे आगे पार ब्रह्म की धुनि मिलती है। इसे लोग चौथा लोक कह देते हैं। संतमत में ऐसा

कहते हैं। मैं सीधी बातें कहता हूं और आप को खोल कर बता देता हूं। ये करणी का मार्ग है। साधन अभ्यास करोगे तभी पता लगेगा। हम कौन से राम की पूजा करते हैं? राम तो चार हैं।

ए सत्संगियो ! इसे खंडन न समझना। मैं तो आप लोगों को भेद बताता हूं। हम तो न्यारे—न्यारे रामों की पूजा में लगे रहते हैं। हमारे मत क्यों फैले? जो पहले चक्र पर फंस गया वह गणेश में ही रह गया। दूसरे चक्र में रह गया वह ब्रह्मा की पूजा में लग गया। इस तरह हमारी पूजा बंटती चली गई। हम उस असली घर तक नहीं पहुंचे जहां मंजिल—मंजिल करके हमें पहुंचना चाहिए था। उस मंजिल को हम भूल गए जो उस रास्ते की थी। कबीर साहब ने तो वह मंजिल चल कर बता दी है। तो राम चार किस तरह से हैं—

एक राम दशरथ घर डोलै।
एक राम घट—घट में बोलै।।
एक राम का सकल पसारा।
संतों का राम इन तीनों से न्यारा।।

अब आप कहोगे—क्या हुआ? एक भाई मेरे पास आया था। भाई नरेन्द्र उसके पास बैठा था। मैंने तो यही पूछा कि आप कौन सा राम जपते हो? उसने कहा—यही राम। राम तो धुनात्मक ही होता है। सो गुरु के नाम बिन निस्तारा नहीं हो सकता है। पर जिस गुरु ने सारी उम्र खेह खाई वह क्या निस्तारा करेगा? जिस गुरु ने सारी उम्र वर्णात्मक नाम जपा है तो वह धुनात्मक में कैसे ले जाएगा? सो सतगुरु तो सतगुरु ही होता है। वह जीवों को लेने के लिये आता है। वह धुनात्मक नाम ही बताता है। वर्णात्मक में नहीं फंसाता है। वर्णात्मक का जाप तो हमें जरूर ही करना पड़ता है पर उस वर्णात्मक से उस धुनि को पकड़ लेते हैं। मैं अभी बता दूंगा। एक राम तो दशरथ का बेटा था। वह त्रेता युग में हुआ। वह

अपना काम करके चला गया। दूसरा राम तुम्हारा मन है। यह राम से कम नहीं है। इस मन के कहने पर ही खाना खाते हो। मन के कहने पर ही रिश्ता करते हो। मन के कहे ही तुम झगड़ा करते हो। मन के कहे ही तुम कलकता और बम्बई दौड़े—दौड़े फिरते हो। यह मन राम से छोटा तो नहीं है। यह मन भी राम है। तीसरा राम सारी दुनिया का कर्त्ता है। वह ब्रह्म है। आपने सुना भी होगा—

ब्रह्म राम से नाम बड़, वरदायक वरदान।
रामायण शतकोटि मंह, लिये महेश जी जान।।

अर्थात् वह राम ब्रह्म राम से बड़ा है। सो तीसरा राम ब्रह्म है। यह सारी दुनिया का कर्त्ता है। ब्रह्म का वर्णन ही वेदों में आता है। पारब्रह्म की बातें जहां वेदों में शुरू होती हैं तो वेद यह कह देते हैं नेति—नेति। मेरे पास आ जाओ वेद मेरे पास हैं। इसीलिये कहा जाता है कि **नेति—नेति वेद पुकारे।** वेद बहुत बड़ी चीजें हैं। ये छोटे नहीं हैं। वेद तो हमारे सिरमौर हैं। पर जो वेदों के उसूल पर चलता है वही वेदों को समझ सकता है। जो वेदों के उसूल पर नहीं चलता, वेदों का पाप उसको खा जाएगा। वेद एक बार भी मत पढ़ो। उन्हें एक बार भी आंखों से मत देखो। वेदों के उसूलों पर चलो, तिर जाओगे। अगर वेदों को रात और दिन पढ़ते रहते हो और उसूलों को तोड़ते हो तो गिर जाओगे। आप कहोगे कि क्या आप के पास कोई प्रमाण है? हां, मेरे पास प्रमाण है। मैंने तो सारा ही जीवन इन प्रमाणों में खोया है। इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा? रावण चारों वेदों का जानकार और टीकाकार था। पर उस रावण की क्या दशा हुई? वह माता सीता को उठा कर ले गया। बदपरहेजी के कारण उस रावण की ऐसी दुर्दशा हुई कि लेने के देने पड़ गए। उसने अपनी सारी राक्षस जाति का नाश करा दिया। किसने करवाया यह नाश? यह नाश रावण की बदपरहेजी ने ही करवाया। सो आप भी इसे अपने ऊपर लागू करके देखो।

यदि हम गंदी लाइन पर चलते हैं तो हम रावण की औलाद हैं। यदि अच्छी लाइन पर चलते हैं तो आर्य वीर हैं और तभी हम आर्य धर्म के ठेकेदार हैं। हमारा उद्धार होगा। यही सनातन धर्म और यही संतमत कहता है।

मैं आप लोगों से बता रहा था कि सबसे बड़ी बात तो अपने जीवन को पवित्र बनाने की है। इसकी कोशिश करो। यदि जीवन ही पवित्र नहीं बना तो फिर क्या करेागे? जीवन पवित्र तो चौथे राम को याद करोगे तभी बनेगा। तीन राम तो मैं बता चुका हूं अब चौथा राम कौन सा है? आपने सुना होगा, क ष्ण जी महाराज गीता में कहते हैं—

त्रिगुण विषय वेदाः निःत्रिगुण भवः अर्जुन।

अर्थात् अर्जुन तू तीनों गुणों से आगे चल। तब मुक्ति मिलेगी। इन वेदों में तो तीन गुणों की बातें हैं, इन्हीं का भेद है। **निःत्रिगुण भवः अर्जुन।** इन तीनों गुणों से आगे चल। मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं। मेरे ऊपर तो मेरे गुरु की दया है और यही बात तुम्हारी रामायण कहती है—

नाम लिया जिन सब किया, सकल वेद का भेद।
बिना नाम नर्कों गए, पढ़के चारों वेद।।

पर उस नाम को नहीं समझा। मैंने चार राम बताए हैं। फिर नाम ने क्या किया? आगे कहते हैं—

कहां तक करूं मैं नाम बड़ाई।
राम न सकहिं नाम गुण गाई।।
राम ने एक तापस तिरिया तारी।
नाम ने कोटि खल कुमति सुधारी।।
कहां तक कहूं नाम प्रभाऊ।
ता सुमरे जम—त्रास नसाऊ।

वह नाम कौन सा है जिससे जम की त्रास मिट जाती है। वह नाम तो वही है जैसा इस वाणी में कहा गया है कि—

जाग—जाग नर क्या सूता।
गुरु के भजन बिन नहीं निस्तारा।

वह गुरु का भजन छठे चक्कर से नीचे नहीं, ऊपर है। पर इसके ऊपर भी ब्रह्म का देश है। उस ब्रह्म के देश से आगे सतगुरु का देश आता है। वह नाम मंजिलें—मंजिलें ले जाता है।

सो मैंने आपको नाम की बड़ाई बताई। तुलसीदास भी उस नाम की बड़ाई करते हैं। पर नाम में बड़ा भेद है। मुझे एक पुरानी मिसाल याद आ गई।

महाराज जी बताया करते थे कि बीकानेर के राजा को कुष्ठ हो गया। उसने सोचा कि अब मैं कैसे जिन्दा रहूंगा। कांशी में करौंत लेकर मर जाऊंगा। कांशी के करौंत का बड़ा भारी महत्व बताते हैं। काफी लोगों को पता भी है उसका क्या महत्त्व था या नहीं था। पर कबीर साहब तो ऐसा कहते हैं—

तिल भर गोश्त खाय के कोटि गौ दे दान।
कांशी करौंत ले मरै, फिर भी नर्क नादान।।

और यही बात नानक साहब कहते हैं।

जे रत लागै कापड़ा, जामा होय पलीत।
जे रत पीवैं नानका, कस हो निर्मल चित्त।।

अब दोहे ही चल पड़े। एक तो कहता है कि—

पर नारि को भोगते, खांय जीव का मांस।
इतने दोजख जाएंगे, कहते हैं रविदास।।

एक और कहता है।

वेद शास्त्र पुरान पढ़े और मांस मछलियां खाय।
सात जन्म तो सूअर बनै, फेर चौरासी जाय।।

अब आप उन चौथे राम को किस तरह समझोगे? वे राम तो

न्यारे हैं। जब उन नामों की धुनकारें सुनोगे तभी पता लगेगा। कब पता लगेगा? मैं उसी राम की महिमा बताता हूं। जब बीकानेर का राजा चला तो उसके साथ हजार—दो हजार आदमी भी चल पड़े। सभी लोग राम—राम करते चल रहे थे। बड़ा भारी शोर था। अब काशी में आए तो कबीर साहब का चेला कमाल बाहर आया। उसने देखा कि ये क्या खेल है? लोगों ने बता दिया कि ये बीकानेर का राजा है। इसको कुष्ठ की बीमारी हो गई है क्योंकि अब ये भाइयों में तो बैठ ही नहीं सकता है इसलिए काशी में करौंत लेने के लिए आया है। कमाल ने उनसे कहा—ठहरो ! लोगों ने कहा—क्या बात है? कमाल ने कहा—मैं इनको ठीक कर दूंगा। उसने पानी की चुलू भर करके 'राम' कह कर उसको छींटे मारे। उसने तीन बार ऐसा किया तो उसका कुष्ठ दूर हो गया। क्या आप मेरी बात समझते हो? संतों के पास तो कई—कई बीमार आते हैं और वे एकदम पवित्र हो जाते हैं। उन संतों की रेडिएशन और उनका आशीर्वाद उनको ठीक कर देता है। पर वे संत अपनी बीमारी को तो दूर नहीं करते हैं। आपने कभी भी ऐसा नहीं सोचा। ये बातें मैं आपको फिर बताऊंगा। एक साथ सारी बातें ही बता दूंगा तो इससे आपकी श्रद्धा टूट जाएगी। सो इन गुरुओं ने तुम्हारे से पर्दा रखा। मैं पर्दा रखने नहीं आया हूं। तो कमाल ने तीन बार राम कहकर चुलू से छींटे देकर उसका कुष्ठ दूर कर दिया। वह एकदम निरोग हो गया। कंचन शरीर हो गया। वह वापिस चला गया। अब कमाल फूला—फूला घूम रहा था और यही सोच रहा था कि जब भी उसका गुरु आयेगा तो मैं उसके आगे अपनी बड़ाई करूंगा। उसे मैं यह बताऊंगा कि मैंने तीन बार राम कह कर एक कुष्ठी को ठीक कर दिया। उसका गुरु आया और आते ही देखा कि कमाल बहुत खुश है। उन्होंने पूछा—आज तुझे क्या मिल गया है? आज तो तू बहुत खुश है। कमाल ने बताया कि महाराज ! मैंने

बीकानेर के राजा का कुष्ठ दूर कर दिया है। कबीर साहब ने पूछा—कैसे किया? कमाल ने बताया—मैंने तीन बार राम कह कर पानी का छींटा दिया था। कुष्ठ दूर हो गया। कबीर साहब ने कहा—वाह ! उन्होंने एक चिट्ठी लिखवा कर उसे दे दी और कहा—तू अब तुलसीदास के पास जा। उन्होंने उसका घमण्ड तोड़ने के लिए यह किया।

लव—कुश ने भी तो राम—लक्ष्मण का घमण्ड तोड़ा था। वह भी यही खेल था। वे इतने तगड़े नहीं थे। सो यह तो परमात्मा का खेल है। वह यही तो करता है कि किसी को ऊपर कर देता है और किसी को नीचे कर देता है और वह जर्रे—जर्रे में रहता है। वह खाता क्या है? वह इस घमण्ड को ही खाता है। जो घमण्ड करता है वह मर जाता है। साधु को कभी भी घमण्ड नहीं करना चाहिए। राजा—महाराजा को भी घमण्ड नहीं करना चाहिए। घमण्ड कभी भी किसी चीज का नहीं करना चाहिए। नहीं तो दुख उठाना पड़ता है। मैं इन बातों को देखता हूं और कभी आपकी बातें सुन भी लेता हूं। अब उन्होंने कमाल को चिट्ठी देकर तुलसीदास जी के पास भेज दिया। कमाल ने तुलसीदास को कहा—महाराज जी ! मेरे गुरु ने चिट्ठी दी है और मुझे भेजा है। चिट्ठी खोली और खोल कर कहा—वाह ! वह कहता है—

डूबा वंश कबीर का, जन्मा पूत कमाल।
तीन बार राम कह, कुष्ठी किया बहाल।।

तुलसीदास जी ने कहा—"भाई ! बैठ जा। तुलसीदास ने रुक्का मार दिया कि किसी को कुष्ठ हो तो सुबह आ जाए। मैं सभी का कुष्ठ दूर कर दूंगा।" मैं उन रामों की महिमा बताता हूं।

एक जुबान से राम जपा जाता है। एक राम का जाप कंठ से होता है। एक राम का जाप हृदय से और एक राम का जाप नाभि से होता है।

जो सारी दुनिया का कर्त्ता राम है वह सतखण्ड में बैठा हुआ है। नानक साहब ने उसकी बड़ी बड़ाई की है। वे कहते हैं—

आदि सत जुगादि सत, है भी सत नानक होसी भी सत।

यही कबीर साहब ने कहा। उन्होंने उसकी बड़ाई की है। ये लोग सत में पहुंचें तभी तो सत का पता लगे। सत का पता ही नहीं है। वह कौन सी मंजिल है? उसने जब नाम की महिमा सुनी तो सवेरे ही डेढ़ हजार आदमी इकट्ठे हो गए। एक बार राम कह कर तुलसीदास ने पांच सौ के कुष्ठ को दूर कर दिया। दूजी बार राम कह कर हजार आदमियों का कुष्ठ को दूर कर दिया। अब कमाल का घमण्ड टूट गया। उसने सोचा कि इन्होंने तो एक राम भी बाकी रख लिया और दो बार राम कहकर डेढ़ हजार आदमियों के कुष्ट को दूर कर दिया। आप भी यह पूछ सकते हो कि आप कितने आदमियों के कुष्ठ को दूर कर सकते हो। यह तो अगले आदमी का विश्वास ही बताएगा।

इसके बारे में मैं क्या बताऊं? मेरे महाराज फकीरचन्द ने कहा था कि बेटा ! जाओ ! तू जिसको प्रसाद दे देगा वही ठीक हो जाएगा। मैंने कहा कि आप गलत बातें न कहो। आप संत हो। मेरे को यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्होंने कारण पूछा। मैंने कहा—इस बात को बदल दो। थोड़ी देर सोचने के बाद उन्होंने कहा—जाओ, जिसका विश्वास होगा, वह ठीक हो जाएगा। मैंने कहा—अब ठीक है। यही बात स्वामी जी महाराज ने हजूर महाराज को कही थी। स्वामी जी ने हजूर महाराज को कहा—सालिगराम ! कोई नई चीज ला। हजूर महाराज यह राधास्वामी नाम ही लाए। उन्होंने स्वामी जी से कहा—तुम कहते हो कि वहां तो साहेब स्वामी की धुनि होती है। वहां तो राधास्वामी की धुनि है। स्वामी जी महाराज का मंत्र सतनाम अनामी का नहीं था। यह उनका मत था। ये लोग व्यर्थ बकवाद करते हैं। उनकी ही पुस्तकों में, जैमल सिंह के जीवन

चरित्र में यह बात लिखी हैं। क पाल सिंह ने छपवाया था। उनका मंत्र तो साहेब स्वामी था। वे साहेब स्वामी का जाप बताते थे। हजूर महाराज ने कहा कि वहां पर तो राधास्वामी नाम की धुनि होती है। तब स्वामी जी महाराज ने कहा—सालिगराम ! इस नाम को प्रगट करने के लिए कबीर को भेजा गया। दादू को भेजा गया और मैं भी आया था, पर गुरुमुख हो सो ही आगे पंथ चलाए। पर तूने इस नाम को खोल कर बता दिया। सो—

कलयुग में स्वामी दया विचारी।
प्रगट करके शब्द पुकारी।।

यह है गुरु का नाम।

गुरु का नाम सुमर प्यारे, बिना इसके नहीं छुटना।

यह गुरु का नाम स्वामी जी महाराज ने बताया और इसको सालिगराम महाराज ने दिया था। उस वक्त स्वामी जी ने कहा कि सालिगराम ! मांग तू क्या चाहता है। फिर उन्होंने तो अपने आप ही कहा—बच्चे को क्या मांगना आएगा? वह तो गैंद, खुलिया या खिलौने ही मांग सकता है। सालिगराम, मैं तुझे स्वयं ही देता हूं। मैं ये सब लिखित बातें बताता हूं। स्वामी जी ने उनसे कहा—जाओ! तुम्हारे परिवार का उद्धार हो जाएगा। हजूर महाराज ने कहा—नहीं। अब स्वामी जी ने कहा—जाओ! तुम्हारी सारी रिश्तेदारियों का भी उद्धार हो जाएगा। हजूर महाराज ने कहा—नहीं जी। इसके बाद स्वामी जी ने कहा—जाओ ! तेरे इलाके का उद्धार हो जाएगा। हजूर महाराज ने कहा—नहीं जी। स्वामी जी ने कहा—जाओ सारे हिन्दुस्तान का उद्धार हो जाएगा। इसे भी हजूर महाराज जी ने नहीं माना तो स्वामी जी ने कहा—जाओ, सारी दुनिया का उद्धार हुआ। अब तो संतुष्ट हो जाओ। हजूर महाराज ने फिर कहा—नहीं, ,महाराज। स्वामी जी ने कहा—जाओ **जो राधास्वामी नाम को समझ जाएगा और जो इस पर विश्वास करेगा, उसका उद्धार**

हो जाएगा। हजूर महाराज ने कहा—अब मैं मानता हूं। ऐसे तो सभी लोग मुफ्त में ही चले जाएंगे। नहीं। जिसकी राधास्वामी नाम पर श्रद्धा और तसल्ली है, उन्हीं का उद्धार होगा। पर यह राधास्वामी नाम जुबान से नहीं जपना है यह तो एक धुनात्मक नाम है। यह वर्णात्मक नाम नहीं है। ये अठारहवीं मंजिल का नाम है। वैसे तुम जुबान से जपते रहे और गुरु से इसकी अठारह मंजिलों का पता नहीं मिला तो फिर क्या करोगे? ये तो वर्णात्मक नाम है और उरले किनारे पर ही रह जाओगे।

लिखने पढ़ने में आया। वही वर्णात्मक कहलाया।।

इसलिए ये पांच नाम भी वर्णात्मक हैं। बाबा जैमल सिंह ने खुली बातें लिखी हैं कि पांच नाम भी वर्णात्मक हैं। धुनात्मक तो वही होता है जिसकी अंतर में धुनि सुनी जाती है। स्वामी जी कहते हैं—लिखने पढ़ने में आया वही वर्णात्मक कहलाया। तो सभी नाम लिखने पढ़ने में आ जाते हैं। सो स्वामी जी ने कहा कि जाओ, राधास्वामी नाम पर जिसका विश्वास होगा वही तिर जाएगा। हजूर महाराज जी ने कहा—अब मैं जरूर ही मान लूंगा। स्वामी जी ने कहा—जाओ—सालिगराम, इस एक राधास्वामी नाम से पहले भी उद्धार हुआ है और आगे इसी नाम से होगा। फिर कोई प्रश्न भी कर सकता है कि क्या राधास्वामी नाम से ही उद्धार होता है? क्या दूसरे नामों से उद्धार नहीं होगा? मैं कहता हूं, नहीं! राधास्वामी नाम के बिना उद्धार कभी भी नहीं होगा। फिर कोई न कोई और वकील जैसा सत्संगी बैठा होगा जो प्रश्न करना चाहता होगा। मैं तो तुम्हें बिना प्रश्न किये ही बता देता हूं। राधास्वामी नाम किसे कहते हैं? वह राधास्वामी नाम उस धुनि का नाम है जो अंतर में होती रहती है। वे धुनि दो होती हैं। जब तुम एक थाली को लकड़ी मारते हो तब एक तो टन की आवाज और दूसरे उसकी तरंग जो ऊपर जाती है। दो धुनियां होती हैं। इसी तरह से

जब वह डंडे के लगने की आवाज होती है वह तो स्वामी है और जो तरंग ऊपर जाती है वही धारा है। वही धार इसी से निकल कर ऊपर जाती है। पर वह क्या करेगी? तुम साईंस द्वारा सोचो! वही धार फिर से बिखर कर उसमें वापिस समा जाती है। जैसे बारिस में बूंदे आकर पड़ती है। फिर वही बूंद, भाप का रूप बनकर समुद्र में समा जाती है। इसी तरह वही धुनि फिर उसमें वापिस आ जाती है। उस मुख्य 'टन' की आवाज में तरंग की आवाज जैसे उल्टी आकर टन की आवाज में समा जाती है। पर यह साईंस वालों का तजुर्बा है मेरा तजुर्बा नहीं है। मेरा तजुर्बा भी मैं तुम्हें बताता हूं। तुम समझो या नहीं तुम्हारी मर्जी। राधास्वामी नाम सुरत शब्द के नाम को कहा जाता है। सो राधास्वामी नाम आत्मा और परमात्मा का नाम है। राधास्वामी नाम तो उस कुल मालिक से जो सुरत बिछड़ कर आई थी, उस सुरत का नाम तो राधा है और शब्द का नाम स्वामी है। उस परमात्मा का नाम स्वामी है और हमारी आत्मा का नाम राधा है। सो इस धुनात्मक नाम के बिना न तो किसी का उद्धार हुआ है और न ही होगा। उसे राधास्वामी कहते हैं। यही सहज योग है। ये सीधा, सादा योग है। पर मैं जो बातें कह रहा था उनको तो छोड़ ही गया। ये बातें जब कमाल ने सुनी तो उसका होश ठिकाने आ गया। उसने सोचा कि मैंने तो फालतु ही घमण्ड किया है। यह राम की महिमा है।

मैंने उन चार रामों की महिमा इशारे से बताई है आप लोगों को। एक राम तो वह था जिससे तीन बार कह कर कुष्ठी को बहाल किया था। दूसरे तुलसी ने दो बार राम कह करके हजारों का कुष्ठ दूर कर दिया। सो राम नाम में एक शक्ति होती है। राम नाम की कमाई की जाती है। राम नाम तो संत का कमाया हुआ होता है। उस राम नाम की धुनकारें उठती हैं। उस राम नाम की महिमा है यह। अब कमाल कबीर साहब के पास आया और उसने

कबीर साहब से कहा—पिता जी! हद ही हो गई है। मैंने तो तीन बार राम—राम कह कर एक को ठीक किया था। पर उसने तो एक ही बार राम बोलकर पांच सौ का कुष्ठ दूर कर दिया। अब कबीर साहब ने बड़े आश्चर्य से कहा—क्या उसने दो बार राम बोल कर हजारों कुष्ठी ठीक कर दिए? कमाल ने कहा कि हां दो बार राम कह कर हजार को ठीक कर दिया। कबीर साहब ने कहा—तुलसी दास भी राम—नाम को नहीं समझ पाया। तुलसीदास भी धोखा खा गए। अब कबीर साहब ने उसे फिर एक चिट्ठी लिखवा कर दी और उसको सूरदास जी के पास भेज दिया। जब वह सूरदास के पास गया तो उसने सूरदास से कहा—महाराज ! मेरे पिता जी ने आपको चिट्ठी दी है। यह लो। सूरदास ने कहा—पढ़कर सुना दे। कमाल ने उस चिट्ठी को पढ़कर सुनाया। उसमें लिखा था—

एक बार राम कहकर पांच सौ कुष्ठी किये बहाल।
कोढ़ी बदले लगा दिया, वह राम अमोलक लाल।।

अर्थात् वह राम रूपी लाल तुलसीदास जी ने कोढ़ी के बदले लगा दिया। वह उसकी महिमा को नहीं जान सका। सो मैंने आपके पास अपना लड़का भेजा है। इसको बता देना, राम नाम की महिमा।

जब ये बातें सुनी तो सूरदास ने कहा—भाई ! एक नदी में दो कोस ऊपर की ओर एक मुर्दा बहता हुआ मिलेगा। उसे तू लेकर आ। कमाल ने कहा—अभी तो आपने कहा था कि चिट्ठी पढ़कर सुना दे मुझे दिखता नहीं है और अब दो कोस दूर का दिखाई देने लगा। सूरदास जी ने कहा—हां, तुम चले जाओ। कमाल गया। उसे मुर्दा मिल गया। उसे उठा कर ले आया और सूरदास के पास उसने ये मुर्दा डाल दिया। सूरदास ने कहा—इसको गर्म पानी से नहला दे। कमाल ने उसको स्नान करवा दिया। सूरदास ने गोबर या गारा के साथ उसकी छाती पर रा लिख दिया। उसके 'रा'

लिखते ही मुर्दा जीवित हो गया। पूरा शब्द 'राम' भी नहीं लिखा था। 'रा' शब्द से ही जीवित हो गया। तब कमाल कबीर साहब के पास आया। कबीर साहब ने कमाल को बताया कि राम नाम की महिमा को तो सूरदास ने ही समझा है। राम की महिमा तो बड़ी भारी है। राम कोई छोटी चीज नहीं है। पर हम माला लेकर के हाथ में ही फेरते हैं। एक दिन सालिगराम महाराज आ रहे थे और एक आदमी राम—राम की माला फेर रहा था। सालिगराम महाराज जी ने उससे कहा—लाला जी! तू राम का सिर क्यों फोड़ रहा है? माला के पास राम नहीं है। राम तो कहीं और ही है। तू तो माला फेरता है लेकिन तेरा मन दौड़ा—दौड़ा फिरता है। कबीर साहब ने कहा—

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहीं।
मनुवां तो चहुं दिश फिरै, ये तो सुमरन नाहीं।।

मन की माला को फेरते तो कोई जोर नहीं पड़ता है। दिन भर में 21606 (इक्कीस हजार छः सौ छः) सांस आते हैं। एक—एक सांस में सुमरन करो तो काम बन जाएगा। असली माला तो यह है। इस माला का तो मणिया भी टूट सकता है। मेरी भी ये मालाएं फेरी हुई हैं। मैं इनकी भी निंदा नहीं करता हूं। जब मेरा मन डांवा डोल हो जाता था तो मैं भी माला फेरा करता था। पर बच्चा केवल तभी तक घोड़ी या गाड़ी के सहारे चलता है जब तक वह पैदल चलना नहीं सीख लेता। जब बच्चा पैदल चलना सीख जाता है तब उसे यदि तुम वह गाड़ी दोगे तो वह उसे फेंक देगा। बूढ़े आदमी को अगर वही गाड़ी कोई चलने के लिए दे दे तो क्या वह उसको फैंक नहीं देगा? वह यही कहेगा कि मैं तो बड़ा हूं। इसके सहारे तो बच्चा ही चला करता है। अब जो आदमी बी. ए, एम. ए. किए बैठा है उसे अगर पहली कक्षा का कायदा दे तो क्या वह चिढ़ नहीं जायेगा। कहेगा—यार! क्या मैं फिर से कायदा ही

पढ़ूंगा? मैंने तो बी. ए. कर रखी है। सो इसी तरह से जो ऊंची मंजिलों पर चला जाता है उससे नीचा सत्संग नहीं होता। काफी लोग यह भी कह देते हैं कि आप इतने ऊंचे क्यों बोलते हो? मैंने कहा कि मैं बोलना तो नीचे ही चाहता हूं, पर यह मेरे बस की बात नहीं है। मैं क्या करूं? जो भी मेरे कर्म में लिखा है वही तो करता हूं। एक आध कोई समझ जाए तो भी अच्छा है।

अब चारों रामों को मैंने सिद्ध कर दिया है। असली और चौथा राम तो वही है जिसकी हम छठे चक्कर से ऊपर धुनि सुनते हैं। उसे ही रमा हुआ राम कहते हैं। उस राम को अगर तुम समझ गए तो तुम्हारा जीवन सफल हो जाएगा। पर तुम तो माला से राम को याद करते हो, माला के पास तो राम नहीं है। माला कहीं फिरती है और मन कहीं घूमता है। इस माला से तो मन काबू में नहीं आता है। मन तो अंतर की धुनि सुनकर ही काबू में आएगा। आपने वह शब्द भी सुना होगा, जिसे सत्संगी गाते हैं–

राधास्वामी दया करैं जिस जन पर।
सोई बचै, शब्द–धुन सुन कर।।

राधास्वामी दयाल की जिस पर दया होती है तो उसी का मन शब्द धुन को सुनकर ही काबू आ सकता है। शब्द की धुन से ही सब कुछ काबू में आ जाता है। पर शब्द शब्द में भेद है। एक शब्द दुख रास है और एक शब्द सुखरास है। एक शब्द काल का है और एक शब्द दयाल का है। एक शब्द से बंधन पड़ते हैं तो एक शब्द से बंधन कटते हैं। दयाल के शब्द से बंधन कट जाते हैं। ये बातें पूर्ण सतगुरु बताता है। तभी पता लगता है। सो जिस पर सतगुरु की द ष्टि पड़ जाती है उसका जीवन सफल हो जाता है। आगे कहते हैं–

जप कर तप कर,करोड़ जत्न कर काशी में जाय करौत लीता।
बिना भजन तेरी मुक्ति कोन्या, बन जा योगी अवधूता।।

अब आपने बहुतों को जप–तप करते भी देखा है। श ंगी ऋषि ने कितना तप किया।

तू काहूड़ो बाबो, तेरा आबो मिटो न जाबो।
एक गोदी, एक आंगली, एक आवे लारै लागो।।

राजा जब गया तो उसने आंखें नहीं खोली उसने तो उर्वशी को भेज दिया। जब उसके तीन बच्चे हो चुके तब वह यज्ञ करने के लिए आया। मैं तो महात्माओं से सुनी हुई बातें बताता हूं। तो कहा गया है–

तू काहूड़ो बाबो, तेरे आबो मिटो न जाबो।

इस तप से 'आबो–जाबो', आना–जाना नहीं मिटता है। क्योकि एक बच्चा गोदी में है और एक उंगली पकड़े हुए है और तीसरा पीछे–पीछे चला आ रहा है और इसके साथ ही उनकी माता जी भी थी। अब फिर कहते हैं–

जप कर तप कर करोड़ जत्न कर,
काशी में जाय करौंत लीता।

अर्थात् कितने ही जप–तप करते रहो। शाम को भी मैंने ये बातें आप लोगों को बताई होंगी। जिसे आप विश्वामित्र कहते हो इतना तप किया कि न्यारा स्वर्ग बना लिया। न्यारा ही सब कुछ कर लिया। पर उसके सहारे पर सतगुरु की बाड़ नहीं थी। वह सतगुरु की आड़ को भूला हुआ था। घमण्डी हो गया था। तीन चार चीजें होती हैं। संत का ह्रदय सफेद होता है। साधु का ह्रदय लाल होता है। सत्संगी का ह्रदय हरा होता है। संसार का ह्रदय काला होता है। सत्संगी होकर भी जिसके दिल में काला है तो वह तो संसारियों से भी गया गुजरा है। पर संत का ह्रदय तो सफेद होता है। आप सफेद होने के कारण को समझते हो कि नहीं? सफेद क्यों होता है। अगर संत का एक दिन भी प्रकाश बंद हो जाए तो सोच लेना चाहिए कि आज मैंने कोई गलत काम कर

दिया है। कोई घटिया अन्न खा लिया है। जिस दिन वह पाप उतर जाएगा वह प्रकाश आ जाएगा। पर साधु को तो उस प्रकाश का पता नहीं है। उसका हृदय तो लाल रहता है और उसमें क्रोध झलकता रहता है। वह चाहे कैसा ही खाए और कैसा ही पीता रहे। काले वस्त्र पर काले दाग को कोई भी नहीं देखता है। सफेद वस्त्र पर अगर दाग लग जाता है तो साफ दिखाई देगा। सो उसने सारी जिन्दगी तप किया। कहते हैं असंख्य वर्षो तक तप किया और भारी दुर्दशा हुई। उर्वशी ने अपना उसके साथ में घर बसा लिया। उसके बाद वह टक्कर मारता फिरा। उसका तप कहां गया? ऐसी ही नारद की बातें हैं। वह ब्रह्मा का पुत्र था। उसका मुंह बंदर का बना दिया और उसने भी स्त्री बनकर 24 बच्चे पैदा किए। आपके शास्त्रों की बातें कहता हूं।

सो प्रेमियो सत्संगियो ! बेशक जप करो, तप करो और भी करोड़ों जत्न करके काशी में करौंत लेकर मर जाना पर मुक्ति नहीं हो सकती। अगर इससे कोई पुण्य होता है तो स्वर्ग वैकुण्ठ को भोग लोगे। जितने भी तुम जप करते हो तो उनका फल मिलेगा। पर उसके बाद आप आ जाओगे। जिस ने भी जप—तप किया, वे स्वर्ग—वैकुण्ठ भोग कर वापिस आ गए। मैं यह नहीं कहता कि उनकी भक्ति बिगड़ गई और वे गिर गए। नहीं, फिर भी उनको धब्बा तो लग ही गया। उनको बट्टा लग गया। जो उनकी करणी थी वह कुछ बिगड़ गई, कुछ रह भी गई। एक मिसाल देकर बताता हूं। किसी के घर में बड़ा भारी धन है। डाका पड़ गया। चौड़े में जो धन था उसको तो डाकू ले गए। जो जमीन में दबा हुआ धन था वह तो रह गया। जब वह धन रह गया तो उसका साहूकारा तो बना ही रह गया। वह पूरी तरह तो खत्म नहीं हुआ। इसी प्रकार से उन्होंने जप तप जो किए थे उनका पूरी तरह से तो मटिया मेट नहीं हुआ। इनको धब्बे लग गए। वे फिर संभल गए

और फिर से उन्होंने अपने चमत्कार दिखाने शुरू कर दिए। तप फिर शुरू कर दिया। पर संतों का मार्ग तो सुरत—शब्द का योग ही है। यह सहज योग है। अब किसी भी भाई के दिमाग दिल में यह बात आई है कि ये तो रोज ही सुरत—शब्द कहता है। यह सुरत—शब्द क्या होता है? हम तो इस बात को नहीं मानते हैं। अगर तुम नहीं मानते तो तुम्हारी मर्जी। अगर तुम देखना और करना चाहते हो तो संत कहते हैं—

जा को दर्शन इत हैं, वा को दर्शन उत।
जा को दर्शन इत नहीं, वा को इत न उत।।

अगर तुमने इसी जीवन मे अपने गुरु के पास जाकर इस प्रकाश को नहीं देखा और इसी जिन्दगी में शब्द धुन को नहीं सुना अैर इसी जिन्दगी में शांति नहीं मिली तो आगे कभी भी नहीं आयेगी। अगर कोई कहे कि मैं बी. ए., बी. एड. की परीक्षा भरने के बाद पास कर लूंगा तो गलत बातें हैं। न तो मरने के बाद किसी ने परीक्षा पास की है और न कोई पास कर सकता है। क्या मरने के बाद किसी ने चिट्ठी भेजी है कि मैं स्वर्ग या वैकुण्ठ में पहुंच गया हूं? यह सब हमारे साथ धोखा होता है। तुम्हारे पुराण भी तो धोखा कर देते हैं। आप पूछो—ये किस तरह धोखा करते हैं? क्या यह धोखा नहीं है कि तेरहवीं कर दोगे तो मुक्ति हो जाएगी, स्वर्ग में चला जाएगा। फिर कहने लग जाते हैं कि तेहरवीं करने से भी मुक्ति नहीं हुई है। आगे कहते हैं कि अब गया जी करवाओ, मुक्ति तभी होगी। इसके बाद कहते हैं कि सप्ताह पढ़वा दो, मुक्ति हो जाएगी। फिर भी कह देते हैं कि नहीं हुई। वह तो भूत ही बना फिरता है। अगर वह चला भी जाता है तो आप ही फंड करना शुरू कर देते हैं। पूछते हैं कि क्या बात है? बताते हैं कि श्राद्धों में टिकड़ी निकालेंगे। क्योंकि दादा मर गया है उसकी टिकड़ी निकालनी है। अगर वह कौवा नहीं आता है तो कहते हैं दादा जी

रुष्ट हो गये हैं। वह टिकड़ी खाने के लिये नहीं आए। क्या तुम्हारा दादा कौवा ही बना फिरता है? ये तो शर्म की बातें हैं। एक तरफ तो तुम्हारे शास्त्र कहते हैं कि चोला छुटते ही आगे चोला तैयार रहता है। यहां आकर बहक जाते हो।

जैन धर्म वालों को बुरा मत कहो। जैन धर्म तो इतना पवित्र है कि एक नम्बर पर है। सनातन धर्म भी हमारा इतना ही पवित्र है। पर रोजगारियों ने इसका नाश कर दिया है। गुरु नानक साहब थे, किसी की भी कोई बुराई नहीं की। वही पवित्रता स्वामी जी ने बताई। वही ऋषि दयानन्द ने कहा। उन्होंने भी किसी का खंडन नहीं किया। उन्होंने तो असलियत बताई। इतनी बातें जरूर हुई कि जो उन्होंने बातें बतााई उनका निर्णय नहीं किया। आप में से कोई चिढ़ न जाना। कभी कह दो कि निर्णय करने तो तू ही एक आया है। ये बातें मैं दावे के साथ कहता हूं। ऋषि दयानन्द देश का सुधार करने के लिए आये थे। उन्होंने कभी अंतर की बातें नहीं बताई। उन्होंने 16 कनागतो का खण्डन किया है। अगर इन्हीं का मंडन कर देता तो कितनी बड़ी बात होती। 16 कनागत किसे कहते हैं? खाने पीने को काबू करने का नाम ही कनागत है क्या? 16 कनागतों को बाहर लगा लेते हैं। इन बाहर के कनागतों को जो लोग कहते हैं—16 कनागत नहीं हैं। ये तो 5 ज्ञान इन्द्रियां हैं। 5 कर्म इन्द्रियां हैं उन्हें काबू में करो, आगे चार अंतःकरण हैं। (मन, बुद्धि, चित और अहंकार) ये चौदह हो गए। आगे रजोगुण और तमोगुण, सतोगुण में चले जाओ। आगे फिर सार गुण में पहुंच जाओगे। ये सोलह कनागत हैं। इनको काबू करना था। इनको तय करना था। इनको काबू करने वाला बड़ा भागी है और बड़ा पुण्य लेता है। पर लोगों ने तो जनेऊ लेना—देना शुरू कर दिया। अगर कोई एक बार भी जनेऊ पहन लेता है तो उसकी सात पीढ़ियां मोक्ष में चली जाएगी। आइए कोई जनेऊ वाला। जनेऊ तो गुरु

नानक साहब ने ही पहनी थी। कबीर साहब और दादू ने पहनी थी। पलटू जी ने पहनी थी। लोगों ने उनको फूंक दिया फिर भी संत कहते हैं—

ब्राह्मण सोई जो ब्रह्म पिछाणै।
बाहर जांदा भीतर आणै।।
पांचों वश कर झूठ नहीं भाखै।
दया जनेऊ घट में राखै।।
काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार न होई।
चरण दास ब्राह्मण है सोई।।

अब बताओ, जाति कौन सी बड़ी है। ब्राह्मण तो उसे ही कहते हैं। हम जनेऊ तो धागों से बना हुआ रखते हैं। हमारे पास में दया का जनेऊ होना चाहिए। पर दिल में तो दया नहीं होती है। कहते हैं कि दया बिन सिद्ध कसाई। हमारे ऋषियों ने तो बहुत बड़ाई की है। जनेऊ है भी पवित्र। पर वह कौन सी जनेऊ है? आठ गांठ नौ तार का जनेऊ पवित्र है। आपने रविदास की बातें सुनी होगी।

काख में से रांपी काढ़ी, चीरो अपनो गात।
चार जुगों के चार जनेऊ, आठ गांठ नौ तार।।

वे चार युगों की आठ गांठ वाली कौन सी जनेऊ। आठ गांठ और नौ तार कौन से हैं? ये हैं पांच विषय, चार अंतःकरण। ये नो तार हैं इनको मेलो। इन नौ को मेल करके आठ गांठ बांध लो। वे आठ गांठें कौन सी हैं? फिर उलटा ही उलझा देता हूं आप लोगों को। ये पांच हैं इनको पांच विषय कहते हैं। और तीन गुण हैं— रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण। इनकी गांठ लगा लो। इनसे ऊपर चले जाओ। इनको गांठ देने का यह अर्थ है। संतों का ऐसा मार्ग है। इनको जब तय कर लिया तो इनकी गांठ ही लगा ली समझो। इस जनेऊ की निंदा कौन करता है? जब आदमी यह जनेऊ पहन लेता है वह कभी भी किसी की बेटी को बुरी निगाह

से नहीं देखता है। वह किसी भी सीमा का उल्लंघन नहीं करता है। वह किसी की भी बुराई नहीं करता है। वह कभी भी शराब–कबाबों में नहीं फंसता है। यही तो एक असली जनेऊ थी। इसको तो भूल गए। इसी कारण से तो हमारा धर्म गिरता जा रहा है। यही हमारा आर्य धर्म था। इन जनेऊओं के धारण करने वाला आर्य माना जाता है। इस जनेऊ को धारण करने वाला पार उतर जाता है। यही एक बड़ा भारी विघ्न है। मैं आपको क्या कह रहा था–

बिना भजन तेरी मुक्ति कोनी, बन जा योगी अवधूता।

सो! बिना भजन के मुक्ति नहीं है। चाहे कितने ही पच–पच के मर जाओ। भजन कौन सा है? उसे बताते तो मुझे कई देर हो चुकी है। तीन चीजें जिसे सतगुरु नहीं बताता है तो वह शिष्य कहां जाएगा? पहला सुमरन, दूसरा ध्यान, तीसरा भजन। ये जो गाते हैं ये तो चेतावनियां हैं। इस गाने से तो चेत आता है। शब्द तो अंतर की धुनि का नाम है। तो पहले जिसका सुमरन ठीक है तो उसका ध्यान भी ठीक है। जिसका ध्यान ठीक है तो उसे शब्द भी मिल जाएगा। पर कई लोगों का तो सुमरन ही ठीक नहीं है। सुमरन कहीं करते हैं और मन कहीं और चक्कर काटता है। अभ्यासी को छठे चक्कर पर ही सुमरन करना चाहिए। राधास्वामी नाम की धुनि की इस जगह पर चोट देकर अभ्यास करोगे, यहां मन ले जाओगे तो उस जगह पर ध्यान टिक जाएगा। आपने सुना भी होगा–

अधर अणी पे आसन रखता सो जोगी अवधूता।

इस छठे चक्कर को ही अधर अणी कहते हैं। जो मन को इस अधर अणी पर टिका लेता है वह जोगी अवधूत होता है जो कि आगे सन्त गति में पहुंच जाता है। इस तरह से अहिस्ता–आहिस्ता जाओ। पहले सुमरन करो इसके बाद ध्यान और ध्यान में पहुंचते ही तो तुम्हारा सुमरन गायब हो जाएगा। कई लोग घबरा जाते हैं। कहते हैं कि महाराज जी! सुमरन तो भूल जाते हैं। मैं कहता हूं कि

क्या हुआ? वे कहते हैं कि हम तो प्रकाश को ही देखते हैं। ये तो कोई भी बात नहीं। सुमरन को तो भूलना ही पड़ता है। वह कुदरती हट जाता है। सुमरन भूल कर प्रकाश को देखते हो इसी का नाम तो ध्यान है। जब ध्यान करते–2 शब्द खुल जाता है तब तुम्हारा सुमरन और ध्यान दोनों ही गायब हो जाते हैं। फिर केवल शब्द ही रह जाएगा। इस शब्द की महिमा कौन कर सकता है? कबीर साहब का दोहा जो मैंने शाम को कहा था, फिर याद आ गया। दोबारा कहना तो नहीं चाहिए पर क्या करूं? इसे कहते हैं कि–

हिलमिल खेलूं शब्द में, अन्तर रही न रेख।
समझों का मत एक है, क्या पण्डित क्या शेख।।

वह शब्द सारी दुनिया की जान है और हम खुद भी उस शब्द में ही जाकर मिल जाते हैं और वहां आनन्द, खुशी हो जाती है। पर मैं आपको बातें बताता हूं **जो दुनिया को खाता है वह भजन नहीं कर सकता है। जो दुनिया से अपने चरण दबवाता है, वह भजन नही कर सकता है। जो दुनिया का धन लूटता है वह भजन नहीं कर सकता है।** धन तो मैंने भी बहुत सारा लूटा है। पर मैंने अपने शरीर के लिए चार पैसे भी नहीं बरते। आप देखते हो। बहुत ही आते हैं और दे देकर चले जाते है। जेबें भर रखी हैं। इनको झड़का लेंगे आज नहीं तो कल दे दूंगा। कल भी नहीं तो परसों दे दूंगा। इनको तो फायदा ही है। मैं तब तक इनकी रखवाली करूंगा। ये बात है। अगर मेरे गुरु महाराज यह नेम नहीं करवाते तो मैं गिर जाता। सत्संगियो, ऐ सतगुरु! मैं तेरा ऋण किस तरह उतारूं? मुझ से ऋण तो नहीं उतर सकता। कोशिश जरूर करता हूं उतारने की। अगर यह ऋण उतर जाए तो मैं इससे बरी हो जाऊं। यही सतगुरु का ऋण है। कोई भागी ही सतगुरु का ऋण उतारता है। उस सतगुरु का ऋण कब

उतरता है? यह तो तभी उतरता है जब सतगुरु के बताए नाम पर चल देता है। गुरु के वचन पर जो डट जाता है उसके सारे पाप कट जाते हैं। उस काम को वह कर लेता है। सतगुरु की सब से बड़ी सेवा यही है कि सुरत शब्द का अभ्यास करके आगे चल पड़ो। आगे कहते हैं–

योगी हो गया जटा बढ़ा ली, अंग रमा ली भभूता।
दमड़ी कारण काया जला ली, योग नहीं तेरा हठ झूठा।

आगे एक बात मैं अपनी बता देता हूं। मेरे गांव के भी काफी आए हुए हैं। मैं भी एक बार साधु बन गया था। एक लंगोटी में घूमता था, मस्त रहता था। कोई रोटी देता तो ठीकरे में खा लेता था। मैं इस बर्तन को क्यों रखता था? दादू जी की वाणी मुझे याद थी।

कांसी ऊपर बिजली, पड़े अचानक आय।
उत्तम बरतन ठीकरा, सतगुरु दिया बताय।।

इसीलिए मैं ठीकरा रखता था। ये मेरी अपनी बीती हुई बातें बताता हूं। उस वक्त में मान बड़ाई थी और मान बड़ाई भी कितनी? आपने कबीर साहब का शब्द सुना होगा।

लोगों के भाव में नंगा त्यागी, औढ़े मान के चीर।

लोगों के विचार में तो नंगा है और त्यागी है पर मान बड़ाई के वस्त्र पहने हुए है। कैसा फकीर बना है? सो फकीर बनना ही बड़ा मुश्किल है। फकीर किसे कहते हैं–

सांसों बिना शरीर नहीं और फांके बिना फकीर नहीं।

सो प्रेमियो, सत्संगियो ! मेरी यह दशा थी और सतगुरु ने बड़ी दया कर दी। मुझे उन्होंने वहां से निकाल दिया। मैं उसका खंडन भी नहीं करता हूं। उनकी तरफ गया तभी तो मैं सतगुरु की शरण में आया। सतगुरु की सैन को समझ कर आप लोगों को बातें बताता हूं और कितनी खुली बातें कह देता हूं। क्या तुम्हारे

अंदर विद्वान और जानकार नहीं बैठे हैं? सब ही हैं। पर कोई बोलता नहीं है। वे क्यों नहीं बोलते हैं? यह सब मेरे गुरु की ही दया है। मैं पहले ही कह देता हूं कि बोलो और खूब बोलो पर खुद पवित्रता हो तो ही बोलना। अपवित्र बर्तन जिसका हो वह कभी नहीं बोलना। यह पवित्र की ही बात है। मैं जो भी बात कहता हूं। अपनी ही बीती हुई कहता हूं मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं। इसलिये–

जोगी हो गया जटा बढ़ा ली अंग रमा लई भभूता।

कबीर साहब की ये वाणी है–

जटा के बढ़ाए साधो कौन–कौन तिरगे।
तिरज्या क्यों न मोर जिसकी लंबी–लंबी पर हैं।
तिरेंगे वे ही नर जिनके हृदय भीतर हर है।
मूंड के मुंडाए साधो, कौन–कौन तिरगे।
तिरज्या क्यों न भेड़ जो छठे महीने मुंडत है।
तिरंगे तो वो हे नर जिनके हृदय भीतर हर है।

इस प्रकार की कबीर साहब की वाणी मिलती है।

शंख के बजाए साधो ! कौन–कौन तिरगे।
तिरज्या क्यों न गधा जिसका शंख जैसा गल है।
तिरंगे तो वोहे नर जिनके हृदय भीतर हर है।

कबीर साहब की बड़ी अच्छी अच्छी वाणियां हैं। परमात्मा का भजन करने से ही हमारा उद्धार हो सकता है। अन्यथा कितने ही सांग कर लो। मैंने भी सांग किए और बड़ा भारी घूमा फिरा। सतगुरु मिल गए तो काम बन गया। इसे कहते हैं–

सतगुरु मिलिया, लेखा निमड़िया।

काल का कर्जा चुक जाता है। आगे कहते हैं–

जिनकी सुरता लगी भजन में, काल जाल से नहीं डरता।
अधर अणी पर आसन रखते, वे योगी हैं अवधूता।।
जिनकी सुरत भजन में लग जाती है.....।

ये गाने का भजन तो सारी माई—बाई ही गाती हैं और मैं भी सुना दूंगा। पर उस भजन में आदमी बेहोश हो जाता है और उससे हर वक्त मस्ती चढ़ी रहती है। जिसकी उस भजन में सुरत लग जाती है वे आदमी काल जाल से नहीं डरते हैं।

मैं एक मिसाल देकर बताऊंगा। किसी ने यहां खून कर दिया है और वह बड़ा जुल्मी कातिल है। वह अमेरिका चला गया। उस पर तो अमेरिका का ही कानून लागू होगा। उस पर यहां का कानून खत्म हो जाता है। खून तो उसने यहां किया है। पर अमेरिका जाते ही वहां के कानून में चला गया। उसे यहां की हत्या की कोई भी सजा नहीं मिल सकती। वह सजा तो यहीं मिल सकती थी। सोचो ! मैं क्या कहता हूं? जब तुम सचखण्ड में, उस दयाल देश में पहुंच जाओगे तो इस तीन लोक की सजा यहीं खत्म हो जाएगी। यहां का कानून यहीं रह जाएगा। इसीलिये वे काल जाल से नहीं डरते। मैंने आपको प्रमाण देकर बातें बताई हैं। वे काल जाल से बच जाते हैं। सो हम काल के देश में हैं। इसको कई लोग न्यायकारी भी कहते हैं। जब हम साधन व अभ्यास करके सतगुरु के प्रताप से जाते हैं तो हम उस दयाल देश में पहुंच जाते हैं। वहां पर पाप और पुण्य दोनों ही नहीं हैं। वह दयाल का देश है। वहां पर इस काल देश का कानून सीधे रूप में खत्म हो जाता है। जैसे मैली तलवार का साण पर चढ़ते ही सारा मैल उतर जाता है। वह साफ हो जाती है और चमक उठती है इसी प्रकार ऊपर पहुंचते ही हमारे तीनों मल उतर जाते हैं। मल विक्षेप आवरण के तीनों ही परदे इस आत्मा पर से उतर जाते हैं। यह आत्मा उनके उतरते ही चमक उठती है। यह मैली तो थी ही नहीं। हमारे कर्मों ने इसको मलिन कर दिया था। यह तो सतपुरूष की अंश है। यह सतपुरुष की गोती—नाती थी पर यहां आकर सब कुछ ही भूल गई और कर्मों में उलझ गई। इसलिए ये जप—तप

सभी यहीं रह जाते हैं। करोड़ों जत्न करने वाले भी खाली ही रह जाते हैं। साधु तो वही है जो अधर अणी पर आसन लगा लेते हैं। वे जोगी अवधूत होते हैं। छठे चक्कर से नीचे अधर अणी नहीं है। अधर अणी यह छठा चक्कर ही है। सो मैंने इस पिंड के भाग बनाकर बता दिया है। आगे कहते हैं—

सोवतड़े नर गए चौरासी, जागतड़ां ने जुग जीता।
रामानन्द के कहत कबीरा, मंजिले मंजिले जा पहुंचा।।

कबीर साहब रामानन्द के शिष्य थे। इसी कारण वे अपने गुरु की बड़ाई करते हैं कि वे सभी मंजिलों को तय कर गए। वे मंजिल मंजिल करके अपने घर पहुंच गए। सो वह अब किसी की परवाह नहीं करता। सतलोक से नीचे की उरले व्यवहार की मंजिलें हैं और उससे ऊपर परले व्यवहार की मंजिलें हैं। इन मंजिलों को जो तय कर जाता है वह पार चला जाता है। सो आपको सारी बातें समझा दी। अब मैं आपको एक शब्द सुनाऊंगा। सत्संग में आकर भी रंग नहीं चढ़ा तो क्या बना? सत्संग सा तीर्थ और नहीं है प्यारे। सत्संग तो एक वैतरणी नदी है। इसकी सभी बड़ाई करते हैं। कथा और कीर्तनों की भी बड़ाई करते हैं। पर सत्संग के बराबर कोई भी चीज नहीं है। उससे करोड़ों जीवों का उद्धार हो जाता है।

दोहा—

नमो नमो सतपुरुष को नमस्कार गुरु कीन्ह।
सुरनर मुनिजन साधवां संतां सर्वस दीन्ह।।
के मुख ले हंस बोलिए दादू रे दीजे रोय।
जन्म अमोलक आपना चले अकारथ खोय।।
आए थे किस काम को, कर बैठे के बात।
के मुख ले मिलिए, राम से खाली दोनों हाथ।।

शब्द–

हम सौदागर आए जी, म्हारी हाट अगम के घाटै।
पहले भाव वस्तु मिलेगी, पीछे घाले पूर्ण बांटै।
सुरत निरत के बने तराजू, काण रती न कांटै।।
इस वस्तु में बहुत नफा है, सो घटती नहीं बांटै।
दुविधा दुरमत कदे न व्यापै, कर सौदा मत नाटै।
ऊंचे चढ़के सन्त पुकारैं, रे जग तू मत नाटै।
जैसे दाम गिरह से काढै, वैसी आवे तेरे बांटै।।
दाम न लेवां, मांगी न देवां, मुख से कदे न नाटैं।
महंगे मोती, दाम हीरां के लाल मिलें सिर सांटै।
कोड़ी कारण माटी छाणैं लालों से तू नाटै।
कर्मो की बहु मार पड़ी है, बिन समझे विष चाटै।।
हमरे सेठ जगत पति स्वामी, गरीब दुख काटै।
श्रद्धा करके कोए भी ले लो, फतेहनाथ नित बांटै।।

अब यह सौदागर मुझे न समझ बैठना। तुम सारे ही सौदागर आए हुए हो। कभी न समझना कि महाराज जी ही सौदागर आए हैं। कोई भागी है जो राम नाम का सौदा कर के ले जाएगा। कोई दुष्ट अभागा है जो वह विषय विकारों का सौदा कर ले जाएगा। वह अपना काला मुंह करके संसार से चला जाएगा। तुम कितना ही धन इकट्ठा कर लो वह धन तुम्हारे काम नहीं आता है। बेटे पोते, धी जंवाई और महल माल सब ही छोड़ कर चले जाते हैं। क्या कोई काम आता है? नहीं। हमारे काम तो एक ही चीज आती है। महात्मा कहते हैं–

चाहना रख एक राम नाम की सारा धोना धो देगी।
उससे दूजी चाहना, तुझे जड़ा मूल से खो देगी।।

चाहना तो एक सतगुरु के नाम की ही रखनी चाहिए। वह सारे धोने धो देती है। इससे दूसरी कोई भी चाहना हो वह दुनिया

जहान से खो देती है। कई भाई आते हैं और कहते हैं कि हम महाराज के पास आते हैं और हमारा काम पूरा नहीं हुआ। ये गलत बातें हैं। सतगुरु के पास जाते हो तो तुम्हारे सारे ही काम पूरे हो जाते हैं। तुम्हारे काम पूरे नहीं होते हैं तो मत जाओ। पर तुम भक्ति के लिए तो जाते नहीं हो। मोक्ष के लिये नहीं जाते। तुम तो और ही काम मांगते हो। कोई नौकरी मांगता है वह पूरी हो जाती है। फिर ध्यान कैसे लगेगा। जो चीज मांगी वही मिल गई। कोई बच्चे मांगता है तो बच्चे हो जाते हैं फिर कहते हैं कि ध्यान नहीं लगता है। मांगी थी वही चीज तो मिल गई। मांगी तो यही एक चीज थी और फिर क्या मिलेगा? बताओ। कोई कहता है कि बीमारी ठीक हो जाए। वह ठीक हो गया। फिर कहते हैं कि ध्यान नहीं लगता। ध्यान तो तूने मांगा ही नहीं था। सो हम सुमरन, साधन, भजन तो मांगते ही नहीं है। अगर ये मांग लें तो साधन भी बन जाएगा। मैंने अपने सतगुरु से कोई भी चीज नहीं मांगी। जिस महात्मा के पास भी गया एक ही चीज मांगी–हे मालिक ! हे महात्माओं! मुझे इस संसार में फिर न बुलाना। मुझ पर दया करना। मैं इस संसार में फिर न आऊं। यह मांग मांगता था मैं तो। अब आप पूछोगे कि क्या अब आप नहीं आओगे? आप को पता है। मुझे तो यही पता है कि मैंने संतों के वचन सुने हैं। उन संतों ने तो यही कहा है–तू फिर नहीं आएगा इस संसार में। बस।

गुरु वचन पर डटगे कटगे फंद चौरासी के।

जिसका गुरु के वचन पर विश्वास है उसका जीवन सफल हो गया। यह मेरा विश्वास है। जिसका विश्वास है उसका बेड़ा पार है।

निश्चय बोवै नेड़े निपजे, कटै काल जम फांसी।
मन मेरा होज्या नगरिया रा बासी।।

सतगुरु सब कुछ देता है पर जो कुछ मांगोगे वही तो वह सतगुरु देगा और तो नहीं। कोई मुकदमें की खातिर आता है कि

मेरा मुकदमा जीता जाए। जो तुमने मांग की वह काम तो बन गया और क्या चाहिए? फिर कहता है कि भजन। सो बेटे भजन तो अब नहीं बनेगा। तूने तो जो मांगा था वह तो मिल गया। तुम कोई भी वस्तु मांगो वह मिल जाती है। भजन मांगते तो तुम्हें भजन भी मिल जाता है। पर भजन के लिए तो कोई भागी ही आता है। सब के सब और ही काम चाहते हैं। कोई धन का भूखा है। कोई औलाद का भूखा है। कोई बिमारियों से बचना चाहता है। कोई इज्जत का भूखा है। कोई मान बड़ाई का भूखा है। चीजें तो संतों के दरबार में मिल जाती हैं। पर सबसे बड़ी जो चीज मिलती है वह नहीं मांगते हो। परमात्मा से परमात्मा को ही मांग लो फिर कुछ भी बाकी नहीं रहता है। अगर परमात्मा के पास धन मांग लिया, तो वह छोड़ना पड़ेगा। बेटे मांगे तो वे भी छोड़ने पड़ेंगे और जायदादें मांगी वे भी छोड़नी पड़ेंगी। पशु, घोड़ी, बैल मांगोगे वे भी छोड़ने पड़ेंगे। वह चीज मांगो कि उस परमात्मा के मांगते ही सब उसके साथ ही आ जाएं। परमात्मा से परमात्मा को मांगने से सभी चीजें मिल जाती है। मैंने कई बार आपको यह मिसाल दी है। सुनी होगी।

एक राजा विदेश में जा रहा था। उसकी चार रानियां थीं। वह उन रानियों के पास गया। पहली रानी से कहा—मैं विदेश जा रहा हूं तुम्हें कुछ मंगवाना हो तो बताओ? उसने सोचा ऐसी चीज मांग कि पति खुश हो जाए, सो चूड़ी मंगवानी चाहिए, सुहाग की। उसने कह दिया कि बढ़िया चूड़ा लाना। सो राजा ने लिख लिया। दूसरी से पूछा–कि क्या चाहिए? उसने भी सोचा कि तेरा पति खुश हो जाएंगे। दूसरी ने कहा—बढ़िया साड़ी ला देना। वह भी लिख ली। अब राजा तीसरी रानी के पास गया और कहा—मैं विदेश जा रहा हूं, तेरे लिए क्या लेकर आऊं? उसने कहा—मेरे लिए सुरमा और बिंदी लाना। यही तो पति को रिझाने की चीजें

होती हैं। उसने कहा—ठीक है। अब वह चौथी के पास गया और उसने कहा—मैं विदेश जा रहा हूं। आपको क्या चाहिए? उसने कहा—कुछ भी नहीं चाहिए। मैंने भी सतगुरु से सतगुरु को ही मांगा था। उस रानी ने कहा—मुझे तो कुछ भी नहीं चाहिए। मुझे तो आपकी ही जरूरत है। मुझे तो और कोई भी चीज नहीं चाहिए। उसको भी राजा ने लिख लिया। राजा बहुत सारा समान लेकर आया। जिसने जो कुछ भी सामन मंगवाया था सभी को दे दिया। बचा हुआ सामान लेकर वह चौथी रानी के घर में चला गया। वे तीनों रानियां चिढ़ गईं और झगड़ पड़ीं। उन्होंने कहा—ये कोई ज्यादा अच्छी है? इस रांड के लिए इतना ज्यादा सामान लाया है। हमें तो केवल एक—एक ही चीज लाकर दे दी। राजा ने कहा कि जो कुछ तुमने मंगाई थी वह तो तुम्हें लाकर के दे दी। इसने सामान नहीं मंगवाया। इसने तो मेरी ही मांग की थी। तुम सोच लो जहां मैं जाऊंगा, सारी चीजें तो वहीं जाएंगी। सो सतगुरु से सतगुरु ही मांग लेते हो तो तुम्हें सारी ही चीजें मिल जाएंगी।

सो भाई बातें तो बहुत ही याद हैं पर यह सुरत तो अपने देश को जहां से आई है, भूले बैठी है इसको कैसे बचाया जाए? कोई भागी है वही बचा सकता है। मिसाल तो बहुत याद हैं। पर क्या करूं?

मैंने कभी अपनी मर्जी का सत्संग न पहले दिया है और न आगे दूंगा। सतगुरु की मौज पर ही आगे सत्संग दूंगा। जो करता है सतगुरु ही करवाता है। सो—

भीख मंगाई तो मेरा क्या घट जाई।
राज दिलाई तो मेरी कौन बड़ाई।।

सो मैं बार बार एक बात ही कहता हूं कि स्वयं को सतगुरु को सौंप दो। मैं गुरुओं को देने के लिए नहीं कहता हूं। दो होते हैं गुरु और सतगुरु। सतगुरु तो धुर से जीवों को लेने के लिए

आता है, मैदान में। गुरु आता है मकान और धन का रखवाला बन कर। मैं सतगुरु की बातें करता हूं। जब सतगुरु आता है तो वह जीवों को लेकर चला जाता है। सो–

सतगुरु की शरना लीजे भाई।
ताते जीव नर्क नहीं जाई।।

सतगुरु की शरण लेने वाला जीव नर्क में नहीं जाता।

।। राधास्वामी।।

आगामी मास के सत्संग कार्यक्रम
13 अक्तूबर बुधवार (जन्म दिन बड़े महाराज जी) दिनोद

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

सितम्बर/अक्तूबर मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1	पानीपत	20 सितम्बर-26 सितम्बर
2	बनवासा	27 सितम्बर-03 अक्तूबर
3	गोहाना	04 अक्तूबर-10 अक्तूबर
4	कैथल	11 अक्तूबर-17 अक्तूबर
5	इस्माइलपुर	18 अक्तूबर-24 अक्तूबर

किसी कुत्ते के मुंह में रोटी का टुकड़ा था। वह दातों में दबाये हुये पानी के सोते के निकट होकर जा रहा था। पानी में उसने अपनी परछाई देखी। भूल और भ्रम में पड़कर उस मूर्ख ने उस परछाई को रोटी समझा। उसको पकड़ने के लिये अपना मुंह खोला। परछाई को तो क्या हाथ आना था, मुंह की रोटी गिर पड़ी। पानी गहरा था, यह भी चली गई। इसी प्रकार मनुष्य परछाई के भ्रम में पड़कर अपनी सच्ची हालत को भी खो बैठता है। क्या यह सच्ची बात नहीं है। असलियत मनुष्य में है, मनुष्य के बाहर नहीं है। उसी की परछाई बाहर दिखाई आती है और मनुष्य उसके भ्रम का शिकार होकर दुख और कलेश भोगता है और अपने आप को भूलकर भ्रम से मारा जाता है। इसी कारण से सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल ने अपनी अनमोल वाणी में कहा है:-

आप आपको आप पिछानो।
कहा और का नेक न मानो।।

मगर कहां है ऐसे व्यक्ति जो इस कीमती और अमूल्य शिक्षा से लाभ उठाकर अपने स्वरूप (जात) की और ही आकर्षित होते हैं। देखने में तो हर जगह यही दिखाई दे रहा है कि सबके सब किसी न किसी प्रकार की अज्ञानता में जकड़े हुए हैं और रात-दिन अपने स्वरूप से दूर चले जा रहे हैं और परछाई में प्रकाश की खोज कर रहे हैं जिसका परिणाम हैरानी और परेशानी होता है। असलियत परछाई में कहां हैं किन्तु परछाई स्वयं असलियत के सहारे अपने कल्पित

रूप का खेल दिखा रही है। अगर वह नहीं होती तो परछाई होना असम्भव था। धन्य हैं वे लोग जो इस रहस्य को समझ कर अपने अन्दर और अपने ही में असलियत या सच्चाई की खोज करते हैं क्योंकि यह किसी न किसी दिन उस तक पहुंच जायेंगे। जो लोग परछाई में उसकी खोज कर रहे हैं अर्थात् परछाई को पकड़ना चाहते हैं तो उनको याद रहे कि परछाई तो हाथ नहीं आयेंगी। मगर वह अपनी सत्यता को भी खो बैठेगे और पथ भ्रष्ट हो जायेंगे।

लघु कथा

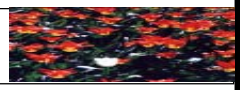

धन्ना भगत लाहौर में बड़े मशहूर आदमी थे। वे भगत जी के नाम से सारे पंजाब में विख्यात थे। वह हर एक मुर्दे के आगे नाचा करते थे। बड़ी मस्ती में लाश के आगे नाचना उनका नित्य कर्म था।

दुर्भाग्यवश उनका जवान बेटा गुजर गया। बहू विधवा हो गई। सब लोग रो रहे थे। घर-घर मातम था। जब लोग लाश शमशान भूमि को ले जाने लगे, भगत जी साथ चल रहे थे। किसी ने कहा "भगत जी करताल बजाओ और नाचो" भगज जी को नाचना पड़ा। अर्थी के आगे-आगे नाचने लगे लेकिन न तो करताल ठीक ताल से बजती थी, न उनके पैर ताल पर जमते थे। बार-बार ताल से उखड़ जाते थे। ठीक है "तू पीर पराई क्या जाने।"

अनमोल वचन

सारा संसार अन्धा आया और अन्धा ही चला गया। परमात्मा को किताबों में पढ़ लिया अथवा महात्माओं से सुन लिया। न कभी अन्दर गये और न दर्शन किए। — *कबीर साहब*

गुरुमुख संसारी पदार्थों और दुनिया के जाल में नहीं अटकता है और उसकी लाभ और हानि में दुखी-सुखी नहीं होता है और जो कोई ओछी बात को कहे तो उस पर गुस्सा नहीं करता है और सदा अपने जीव के कल्याण और सतगुरु की प्रसन्नता पर नजर रखता है। — *महर्षि शिवव्रतलाल जी*

परमार्थ पर चलने वालों को यह बात सदा याद रखनी चाहिये कि जिस जीव का मांस काटकर वे खाते हैं उसका बदला उन्हें अपने मांस से देना पड़ेगा। — *फकीर मीरदाद*

ज्ञान-सार

छोटे-से-छोटा तथा बड़े-से-बड़ा जो भी कर्म किया जाये, उसमें साधक को सावधान रहना चाहिये कि कहीं किसी स्वार्थ की भावना से तो कर्म नहीं हो रहा है।

साधक को केवल इतनी सावधानी रखनी है कि उसको जो चीज नाशवान् दीखे, उसके मोह में न फंसे, उसको महत्व न दे। नाशवान् चीज को काम में ले, पर उसकी दासता स्वीकार न करे।

साधक का उद्देश्य बातें सीखने का नहीं होना चाहिये, उसे अनुभव करने का होना चाहिये। सीखे हुए ज्ञान से विद्वान्, वक्ता, लेखक तो हो सकता है परन्तु भगवत प्रेमी नहीं हो सकता।

सत्संग सार
हिसार
11-7-2004

मनुष्य के पास अपने विचारों की शक्ति को एकत्र करने का बहुत बड़ा खजाना है, जो अन्य किसी भी योनि के पास नहीं है। विचारों की शक्ति को एकत्र करके हम वाक सिद्धि, दृष्टि सिद्धि और कल्पना-सिद्धि आदि ऐसी शक्तियाँ प्राप्त कर सकते हैं, जिससे संसार की जो भी वस्तु हम चाहें वही प्राप्त कर सकते हैं और जो चाहें वह कार्य कर सकते हैं। परन्तु हमारा तो दिवालिया निकला हुआ है। हमारे पास में तो कुछ भी नहीं हे। हम भिखारी बने फिरते हैं क्योंकि हमारी विचारों की इस एकाग्रता का विनाश हमारी दसों कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों और इच्छाओं-वासनाओं के कारण हमारे विचारों के बिखराव के कारण हो रहा है।

हम अपने इन्द्रियों और विचारों द्वारा हमारी शक्ति के बिखराव होने को नहीं रोकते हैं और न ही गुरु के बताए अनुसार अपने इष्ट में ध्यान लगाते हैं। उल्टे हम यह शिकायत करते हैं कि हमें प्रकाश नहीं दिखता है और न ही शब्द सुनाई देता है। अरे, अपने सभी द्वारों को बन्द करके अपने दसवें द्वार पर ध्यान को केन्द्रित करके देखो। वह शक्ति लावे के रूप फूट न पड़ेगी। तुम्हें प्रकाश दिखाई दे जाएगा और शब्द भी सुनाई देगा। परन्तु जब तक गुरु के वचनों के अनुसार काम नहीं करोगे, तो तब तक कुछ भी नहीं प्राप्त होगा। तब तो तुम्हारी सभी शिकायतें व्यर्थ ही होंगी। कबीर साहब कहते हैं कि

गुरु वचन माने नहीं, गुरु ही लगावे दोष।
ऐसे अन्यायी जीव को, मुए न पावे मोक्ष।।

हमारे ऊपर थोड़ा दुख पड़ता है तो हम हाए-2 करने लग जाते हैं। हमारी संसारी लालसाओं से हम निकल नहीं सकते हैं। कोई कहता है कि अजी, मुझे यह दुख हो गया है; मेरा यह धन्धा छुट गया है; मुझे नौकरी नहीं मिलती है; मेरी घरवाली बीमार हो गई है। यह आश्चर्य की बात है कि हीरे जवाहरात की दुकान पर जाकर के तुम बिसाती की दुकान पर मिलने वाली चीजों की मांग करते हो। फिर तो वह दुकानदार तुम्हारे ऊपर हंसेगा नहीं तो और क्या करेगा? शुरू में तुम जिस चीज के लिए आये थे, उसी चीज की मांग करो। बल्कि उस चीज को भी मांगने की जरूरत नहीं है। उस चीज की भी केवल एक इच्छा और एक तड़प रखो। उस तड़प में तुम्हारी जब दिल की गहराई से आह निकलेगी तो वह चाह किसी भी समय पूरी हो जाएगी। सन्तों सतगुरुओं के पास जाकर भी संसारी इच्छाओं की चाह रखते हो तो यह एक आश्चर्यजनक और दयनीय अवस्था है।

इसके अतिरिक्त दुख-सुख तो जीवन में ऐसे ही आते जाते रहते हैं। फिर सन्त सतगुरु की मौज को भी लोग समझ नहीं सकते हैं कि वे क्या करते हैं और क्या कहते हैं। सन्त सतगुरु तो परीक्षाएँ भी लेते रहते हैं और अपने शिष्य की आजमाइश भी करते हैं। मालिक तो यह कहते हैं कि

ताऊँगा, तपाऊँगा, नरव से तारूँ खाल।
जो मेरा भक्त डिगे नहीं, तो पल में कर दूँ निहाल।।

अब लोगों की तो ऐसी अवस्था है कि दुख-सुख आने की तो बात ही बहुत दूर है, उनको यदि कुछ उल्टी-सीधी बातें कह दी जाए

तो वे ढिंढोरा पीटते फिरते हैं कि मुझे तो गुरु ने ऐसा कह दिया है, आप देख लो। अब उनको यह पता तो नहीं होता है कि गुरु ने उनकी कोई परीक्षा ली होगी या उनका कोई कर्म काटने के लिए ही ऐसा कुछ कह दिया होगा। यदि कोई गुरु की कला को ही समझ जाता है, फिर तो वह शिष्य नहीं गुरु ही बन जाता है। तब तो उसको अपने कल्याण की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। वह तो दूसरों का भी कल्याण कर सकता है। परन्तु संसारी जीव ऐसे ही होते हैं उनसे अपने मन में उठने वाली झालें रूकती नहीं हैं। इसीलिए वे आवेश में आकर कुछ का कुछ कह देते हैं और कुछ का कुछ कर बैठते हैं। साधारण जीवों में अहंकार की भावनाएँ प्रबल होती हैं। वे शिष्य नहीं बल्कि वे तो सीधे ही गुरु बनना चाहते हैं और गुरु बनने के लिए भला-बुरा, झूठा-सच्चा सब कुछ करने के लिए तैयार रहते हैं उनको यह पता नहीं है गुरुवाई में तो दुख ही दुख है जो कुछ है वह शिष्यताई में ही है। सो गुरुमुख बनो। गुरुमुखों तथा शिष्यों के लक्षण समझो। सन्त कहते हैं कि

उल्टे-सीधे वचन का शिष्य नहीं माने दुख।
कहें कबीर संसार में, सो ही कहिए गुरुमुख।।

शिष्य बन करके सब कुछ प्राप्त कर लो। सन्तों ने आज साधारण जीव के लिए करणी के मार्ग को बहुत ही सरल बना दिया है। जीव के जगत-अगत बनाने का ऐसा साधारण मार्ग कभी भी नहीं रहा। यह तो सन्तों ने जीवों पर अपनी विशेष कृपा बख्श दी है जो नाम प्रकट कर दिया है। सन्तों का नाम लेकर भी जीव यदि दुखी है तो वह तो सन्तमत पर एक धब्बा ही है। स्वामी जी कहते हैं-

कलियुग में स्वामी दया विचारी।
प्रगट करके नाम पुकारी।।

यह घटना उस समय की है जब हजूर महाराज कंवर जी ने 1997 में हुजूर ताराचन्द जी महाराज के चोला छोड़ने के पश्चात् गद्दी सम्भाली थी। हुजूर महाराज जी को गद्दी सम्भाले कुछ ही माह बीते थे। मैंने बड़े महाराज जी की एक कैसेट में सुना था तथा पुस्तकों में पढ़ा था कि जिसकी श्रद्धा और विश्वास होगा उसके सब काम सतगुरु पूर्ण करते हैं। मेरे छोटे लड़के जयरत्न की, जिसकी आयु **उस समय 7** वर्ष थी, किसी घटना के कारण जबान (आवाज) तुतला गई थी अर्थात वह स्पष्ट नहीं बोल सकता था। मैंने कई डाक्टरों को दिखलाया किन्तु कोई फायदा नहीं हुआ। आखिर मैं हुजूर महाराज कंवर जी के आशीर्वाद का विचार करके दिनोद आश्रम में आया। जब मैंने अपने परिवार सहित आश्रम में प्रवेश किया उस समय बच्चे की आवाज बिल्कुल तुतली थी। वहाँ आश्रम में हाल में हम सब जाकर बैठ गये। थोड़ी देरी के पश्चात ही हुजूर महाराज जी की हमारे परिवार पर बड़ी अनुकम्पा हुई। आश्रम की देखभाल करते हुए वे इधर से निकले। बिना कुछ हमारे कहे मेरे बच्चे के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दे दिया। प्रेम पूर्वक हमारे हाल-चाल पूछे, आश्रम से निकलते ही बच्चे की बोली में जादुई चमत्कार हुआ। हम सब आश्चर्य चकित रह गये कि बच्चे की आवाज बिल्कुल ठीक हो चुकी थी। हालांकि जिस दिन से गुरु महाराज ताराचन्द जी ने मुझे नामदान दिया था उसी दिन से मुझे पूर्ण यकीन हो गया था किन्तु नये महाराज कंवर जी के गद्दी सम्भालते ही ऐसा चमत्कार हुआ जिसने मुझे पूर्ण समर्पित होने के लिए प्रेरित किया।

वर्ष 2003 में मार्च महीनें में अपनी लड़की पुष्पा जिसको बच्चा होने वाला था। मैं उसको जापे के वास्ते अपने शहर संगरिया जिला हनुमानगढ़ (राजस्थान) में लाने हेतु, उसकी ससुराल कितलाना चला गया। मेरे मन में बड़े संशय उठ रहे थे कि कहीं कोई परेशानी नहीं हो जाये, क्योंकि बच्ची के कलेजे में दर्द रहता था तथा उसका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता था। उसके पेट में बच्चा भी उल्टा था। बहुत सारी समस्याएं एक साथ नजर आ रही थीं।

उसके ससुराल में ही रात के तीन–साढ़े तीन बजे के करीब स्वप्न में मुझे हुजूर महाराज कंवर सिंह जी ने दर्शन दिए। मैंने उनको झुककर नमन किया तथा गुरुजी ने मुझे आदेश दिया कि जाओ मैंने इसका कलेजा ठीक कर दिया है। किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होगी। मैंने उसके बाद ध्यान में बैठकर स्मरण किया तथा लड़की को लेकर संगरिया चला गया। राधास्वामी के नाम पर, एक डाक्टर से दवा ली जिससे लड़की का बच्चा पेट में सही स्थिति में आ गया। डिलिवरी के समय जरा भी परेशानी नहीं हुई लड़का हुआ तथा सब ठीक हो गया।

प्रेषक

हनुमान प्रसाद लखारा प्राध्यापक (लेखा शास्त्र)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पो. संगरिया,
जिला हनुमानगढ़ (राज.) 335063

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

सेवादारों के लिए विशेष सूचना

सभी सेवादारों को ''राधास्वामी संत संदेश'' पत्रिका के माध्यम से सूचित किया जाता है कि दिनोद आश्रम का वार्षिक सत्संग (जन्म दिन बड़े महाराज जी) **दिनांक 13 – 10 – 2004** को होना है। अत: सभी सेवा करने के इच्छुक सत्संगी व सेवादार दिनांक **11 – 10 – 2004** को प्रात: **8:00** बजे दिनोद आश्रम में निश्चित समय पर अवश्य पहुंच जायें।

इस बार सेवादारों को सत्संग से दो दिन पूर्व इसलिए बुलाया जा रहा है क्योंकि दिनोद आश्रम में निर्माण कार्य चल रहा है। अत: सत्संग की सुविधाजनक व्यवस्था करने के लिए सभी सेवादार समय पर पहुंच जाएं।

''राधास्वामी संत संदेश'' के सदस्यों से भी प्रार्थना की जाती है कि यह सूचना अपने अधिकतम सत्संगियों व विशेष रूप से सेवादारों तक जिस प्रकार भी संभव हो विशेष रुचि लेकर शीघ्रातिशीघ्र पहुंचाने का कष्ट करें। इसे अति आवश्यक समझें।

।। राधास्वामी ।।

सचिव,
राधास्वामी सत्संग दिनोद, भिवानी